04 - धुर दक्षिण में नयी दिशा

05 - स्वच्छ इंदौर में अब प्रदूषण बड़ी चुनौती

A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 25 जून, 2024

06- अपनी क्षमता को पहचानकर विद्यार्थी करें लक्ष्य निर्धारित: हेमंत खण्डेलवाल

07- तबला कार्यशाला (ताल आराधना) में युवा तबला वादकों एवं...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 288 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

नीट घोटाले के बीच ज्ञान का केंद्र कैसे बन सकेगा भारत?

क्विंट हिंदी

पी. चिदंबरम ने इंडियन एक्सप्रेस में लिखा है कि अठारहवीं लोकसभा के चुनाव नतीजों से एक मजबूत संसदीय विपक्ष सामने आया है जो सोलहवीं और सत्रहवीं लोकसभा में गायब था। चुनाव नतीजों ने सत्ता और विपक्ष दोनों को संसद की महान परंपराओं को पुनर्जीवित करने का अवसर दिया है। विपक्ष को अरुण जेटली की इस धारणा को भूल जाना चाहिए कि सदन में बाधा डालना वैध संसदीय कार्य है और यह 'लोकतंत्र के हित' में होता है। विपक्ष कांग्रेस के घोषणापत्र 2024 के न्यायपत्र से अपनी शुरुआत कर सकता है, जिसमें दोनों सदनों के साल में सौ दिन बैठने, संसद की महान परंपराओं को पुनर्जीवित करने, सप्ताह का एक दिन विपक्ष के सुझाए एजेंडे पर चर्चा करने, पीठासीन अधिकारी को तटस्थ रहने जैसे वादे किए गये थे।

चिदंबरम लिखते हैं कि 240 सीटों वाली बीजेपी को अल्पमत सरकार चलाने का ठप्पा परेशान करेगा और वे इससे छुटकारा पाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। छोटे दलों को खतरे में बताते हुए लेखक का मानना है कि वे बीजेपी के जाल में फंस सकते हैं। कांग्रेस के घोषणापत्र में संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन करने और दलबदल को विधानसभा या संसद की सदस्यता के लिए स्वतः अयोग्य घोषित करने का वादा है। विपक्ष को दसवीं अनुसूची मे संशोधन विधेयक लाना चाहिए। अगर सत्ता पक्ष संशोधन विधेयक का विरोध करता है तो वह मतदाताओं की नजर में बदनाम हो जाएगा। लेखक का सुझाव है कि इंडिया गठबंधन को नौकरियों के मुद्दे को आगे बढ़ाना चाहिए। उन्हें अवसर का लाभ उठाना चाहिए और सरकार के लिए पटकथा तैयार करना चाहिए।

तवलीन सिंह ने इंडियन एक्सप्रेस में लिखा है कि शिक्षा में घोटालों के इस मौसम के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नालंदा विश्वविद्यालय में शानदार भाषण दिया। घोटालों का जिक्र तो नहीं किया लेकिन उन्होंने अपनी सरकार की नई शिक्षा नीति की तारीफ की। मोदीजी ने कहा कि इस नीति का लक्ष्य है कि देश की युवा पीढ़ी के सारे सपने साकार हों। भारत को ज्ञान का केंद्र बनाने के अपने मिशन का भी उन्होंने खुलासा किया।

सवाल ये है कि भारत ज्ञान का केंद्र कैसे बनेगा जब शिक्षा का इतना बुरा हाल है। लाखों विद्यार्थियों का भविष्य बर्बाद हो सकता है सिर्फ इसलिए कि शिक्षा मंत्रालय 'नीट' परीक्षा ढंग से नहीं करा पाया है। जांच समिति बना दी गयी जो तहकीकात करेगी।

तवलीन सिंह सवाल उठाती हैं कि जांच समिति तो ठीक है लेकिन उन विद्यार्थियों के लिए आप क्या करेंगे जिनका भविष्य खराब हुआ। लगता है प्रधानमंत्री को खबर नहीं मिली है, अन्यथा वे कभी न कहते कि भारत को ज्ञान का केंद्र बनाने का उनका 'मिशन' है। खराबी इस हद तक है कि भारतीय विद्यार्थी यूक्रेन में डॉक्टर बनने के लिए जा रहे हैं जबकि युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। नालंदा के प्राचीन दौर से जितनी जल्दी प्रधानमंत्री वर्तमान में आते हैं, उतना उनके लिए अच्छा होगा।

करन थापर ने हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखा है कि महात्मा गांधी भले ही हमारे राष्ट्रपिता हों लेकिन हम कितनी बार याद करते हैं कि उन्होंने कहा क्या? सरकारें कितनी बार उनकी इच्छाओं का पालन करती हैं? 18 मार्च 1922 को यंग इंडिया में गांधी ने लिखा था, 'मैं सरकार के प्रति असंतुष्ट होना एक गुण मानता हूं।' ये ऐसे शब्द हैं जिन्हें हमारी सरकार को पत्थर पर लिख देना चाहिए और हर मंत्री के कार्यालय में प्रमुखता से रखना चाहिए। कश्मीर के भारत का अभिन्न अंग होने या न होने पर कथित तौर पर सवाल उठाने और तत्कालीन राज्य के अलग होने की वकालत करने के चौदह साल बाद दिल्ली के उपराज्यपाल ने अरुंधति रॉय पर गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम के तहत मुकदमा चलाने की अनुमति दे दी है।

करन थापर लिखते हैं कि 1 मई 1962 को राज्यसभा में सीएन अन्नादुरई ने द्रविड़ आत्मनिर्णय के अधिकार की मांग करते हुए दक्षिण भारत के लिए अलग देश की इच्छा रखी थी। इसे राष्ट्रविरोधी नहीं माना गया।

हम बुद्धिमान सहिष्णुता की स्थिति से पीछे हटकर आवेगपूर्ण और बिना सोचे-समझे असहिष्णुता की स्थिति में कैसे पहुंच गये हैं? क्या ऐसा इसलिए है कि अरुंधति रॉय सरकार की तीखी आलोचना करती रही हैं? हमें उन्हें अपना सोलजेनित्सिन नहीं बनाना चाहिए, न ही उनके साथ वैसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि पूर्व सोवियत संघ ने किया था।

सुनीता एरॉन ने हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखा है कि 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद भारतीय जनता पार्टी 2024 का आम चुनाव 'मंदिर लहर' पर सवार होकर जीतने की तमन्ना रख रही थी। लेकिन, पीएम नरेंद्र मोदी के रोड शो, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के 2 मई को अयोध्या मंदिर में भगवान राम को नमन करने और गणमान्य लोगों के दौरे के बावजूद नतीजे बीजेपी के अनुकूल नहीं रहे। समाजवादी पार्टी ने 'ना मथुरा, ना काशी, अबकी बार अवधेश पासी' के नारे पर फैजाबाद की सीट जीत ली। सुनीता लिखती हैं कि लोकसभा की दूसरी पंक्ति में अवधेश प्रसाद को जरूर जगह मिलेगी। उनके पास कथित भ्रष्टाचार और अधिग्रहित भूमि, मकान और दुकानों के लिए देरी से मिलने वाले मुआवजे के कारण स्थानीय लोगों की पीड़ा से लेकर बहुत कुछ कहने को है। बीजेपी के लिए यह सुकून की बात है कि मेरठ में भगवान राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल हार से बच गये। उन्होंने 10,585 मतों के मामूली अंतर से जीत दर्ज की।

बीजेपी अखिलेश यादव पर परिवारवाद के आरोप लगातार लगा रही थी। इसका जवाब अखिलेश ने आक्रामकता से दिया, 'उन्हें अपने परिवार को आगे बढ़ाने से कौन रोकता है?' एसपी 37 सीट लेकर देश की तीसरी बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। 2024 के चुनावों ने उन आवाजों को खामोश कर दिया है जो मुलायम की ओर से अपनी विरासत अखिलेश को देने के संदर्भ में उठती रही थीं।

आसिम अमला ने टेलीग्राफ में लिखा है कि नरेंद्र मोदी सरकार के पूर्ण बहुमत से वापस आने में विफल रहने पर राहत की व्यापक भावना देखी गयी। कई लोगों को बेतुकी लगती यह भावना फासीवाद के चंगुल से भारतीय लोकतंत्र की जीत पर खुशी का प्रतिनिधित्व करती है। जनता ने कट्टरता की राजनीति को खारिज कर दिया। 2014 में मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को लेकर अधिनायकवाद के खतरे की चेतावनी दी गयी थी उन्हें भी खारिज किया जाता रहा। पिछले दशक ने हमें सिखाया कि आत्म-प्रशंसा वास्तविकता से बहुत कम मेल खाती है। आसिम अमला ने आनंद तेलतुम्बड़े को उद्धृत करते हुए लिखा है कि टिप्पणीकारों को 'अपनी भावनाओं को लोगों पर थोपने' से बचना चाहिए।

(क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

संसद सत्र की शुरुआत

पीएम शपथ लेने पहुंचे तो राहुल ने संविधान की कॉपी दिखाई, फिर नमस्ते किया..

पीएम मोदी व अन्य सांसदों ने लोकसभा सदस्य की शपथ ली

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान शपथ लेने पहुंचे तो विपक्ष बोला- नीट...नीट, शेम-शेम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोमवार से 18वीं लोकसभा का पहला सत्र शुरू हो गया है। सबसे पहले सदन में राष्ट्रगान हुआ, उसके बाद पिछले सदन के दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद पीएम मोदी ने लोकसभा सदस्य की शपथ ली। मोदी के बाद उनकी कैबिनेट के लोकसभा सांसदों ने शपथ ली। सदन को 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया था। लंच के बाद सदन की कार्यवाही फिर शुरू हुई। संसद में इस बार विपक्ष मजबूत है और अपनी मजबूती को उसने मोदी सरकार पर आज हंगामेदार सत्र की शुरुआत से जता दिया है। पीएम शपथ लेने पहुंचे तो राहुल गांधी ने संविधान की कॉपी दिखाई, फिर नमस्ते किया।

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का नाम जब शपथ के लिए बुलाया गया तो विपक्ष ने नीट..नीट, शेम-शेम बोलना शुरू कर दिया। विपक्ष नीट पेपर धांधली में उनके इस्तीफे की भी मांग कर चुका है।

सत्र शुरू होने से पहले संसद पहुंचे पीएम मोदी ने कहा- देश चलाने के लिए सबकी सहमति जरूरी है। हम सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। संविधान की मर्यादाओं का पालन करते हुए देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं। देश को एक जिम्मदार विपक्ष की जरूरत है। इससे पहले भाजपा सांसद भर्तृहरि महताब को सोमवार सुबह 10 बजे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रोटेम स्पीकर की शपथ दिलाई। इस दौरान संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू राष्ट्रपति भवन में मौजूद थे।

संसद सत्र से पहले मोदी ने इमरजेंसी का जिक्र किया, बोले-

50 साल पहले संविधान को नकार दिया गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद सत्र शुरू होने से आधे घंटे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इमरजेंसी का जिक्र किया। दरअसल, आज यानी 25 जून को देश में आपातकाल के 50 साल पूरे हो रहे हैं। पीएम ने कहा- 25 जून न भूलने वाला दिन है। इसी दिन संविधान को पूरी तरह नकार दिया गया था। भारत को जेलखाना बना दिया गया था। लोकतंत्र को पूरी तरह दबोच दिया गया था। उन्होंने कहा कि भारत के लोकतंत्र और लोकतांत्रिक परंपराओं की रक्षा करते हुए देशवासी संकल्प लेंगे कि भारत में फिर कभी कोई ऐसी हिम्मत नहीं करेगा, जो 50 साल पहले की गई थी।

- **भाजपा ने जेपी नड्डा को बनाया राज्यसभा में सदन का नेता, पीयूष गोयल की जगह लेंगे–** भाजपा ने जेपी नड्डा को राज्यसभा में सदन का नेता बनाने का फैसला किया है। इससे पहले केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल सदन में यह जिम्मेदारी संभाल रहे थे, लेकिन उत्तर मुंबई लोकसभा सीट से सांसद चुने जाने के बाद उन्होंने राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। अब जेपी नड्डा को ये दायित्व सौंपा गया है।

नीट पेपर लीक मामले में अब तक 25 गिरफ्तारियां

ममता ने पीएम मोदी को चिट्ठी लिखी, कहा- सेंट्रलाइज्ड एग्जाम खत्म होना चाहिए

नईदिल्ली (एजेंसी)। नीट परीक्षा के पेपर लीक की जांच में अब तक देश के अलग-अलग राज्यों से 25 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। बिहार से 13, झारखंड से 5, गुजरात के गोधरा से 5 और महाराष्ट्र के लातूर से 2 गिरफ्तारियां हो चुकी हैं। वहीं नीट मामले पर अब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चिट्ठी लिखी है। उन्होंने पीएम से कहा है कि सेंट्रलाइज्ड परीक्षा का सिस्टम खत्म हो और पहले की तरह डीसेंट्रलाइज्ड हो। यानी राज्य और केंद्र अलग-अलग परीक्षाएं आयोजित करें।

नांदेड़ एटीएस ने लातूर के 2 टीचर संजय तुकाराम जाधव और जलील खान उमर खान पठान, नांदेड़ के इरन्ना मशनाजी कोंगलवाव और दिल्ली के गंगाधर के खिलाफ पब्लिक एग्जाम एक्ट 2024 के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस ने जाधव और पठान को रविवार देर रात गिरफ्तार किया है, जबकि अन्य दो आरोपी फरार हैं।

सीबीआई की टीम सोमवार को बिहार और गुजरात पहुंची थी

मामले की जांच केंद्र सरकार ने सीबीआई को सौंपी है। सीबीआई की टीमें 24 जून को बिहार और गुजरात पहुंची है। बिहार ईओयू ने अपनी जांच रिपोर्ट सीबीआई को सौंप दी है।

एनएसयूआई ने जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया

नीट परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर एनएसयूआई के सदस्यों ने दोपहर 1 बजे दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकरियों ने संसद घेरने के प्रयास में पुलिस बैरिकेड तोड़ने की भी कोशिश की। प्रदर्शन में परीक्षा रद्द करने और शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की गई। सुरक्षाबलों ने बैरिकेड कूदने वाले प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया और फिलहाल प्रदर्शन खत्म कर दिया है।

उफनती नदी और जोखिम में जान...

भारतीय सेना के जज्बे को सलाम; महज 48 घंटे में तैयार किया ब्रिज

गंगटोक (एजेंसी)। भारतीय सेना के इंजीनियरों ने उत्तरी सिक्किम में सीमावर्ती गांवों को फिर से जोड़ने के लिए 150 फुट लंबा एक सस्पेंशन पुल बनाया है। राज्य में लगातार भारी बारिश हो रही है जिसके कारण आम लोगों को परशानी का सामना करना पड़ रहा है।

हालांकि, भारी से भारी मुश्किलें के बीच भी भारतीय सेना मदद के लिए हमेशा आगे रहती है। ऐसा ही कुछ सिक्किम में देखने को मिली। बता दें कि त्रिशक्ति कोर के कार्मिकों ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में काम किया और 48 घंटे से भी कम समय में इस पुल को तैयार किया। नीचे तेज बहाव में बहता बारिश का पानी और ऊपर अपनी जान को जोखिम में डालकर सेना के जवानों ने इस पैदल यात्री पुल का निर्माण कर अपनी शक्ति का बेहतरीन प्रदर्शन पेश किया है।

पुल से मिलेगी लोगों को बड़ी राहत

सेना के अधिकारियों के अनुसार, यह पुल अब लोगों की आवाजाही में सुविधा प्रदान करेगा और क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय लोगों को राहत सामग्री उपलब्ध कराएगा। इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मानसून के दौरान सिक्किम समेत पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न हिस्सों में आने वाली बाढ़ से निपटने की तैयारियों की समीक्षा की। नदियों के जलस्तर में वृद्धि के कारण मानसून के दौरान कई पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में भारी बाढ़ आती है। सिक्किम, उत्तराखंड और कुछ अन्य राज्य भी मानसून के दौरान भूस्खलन और बारिश से जुड़ी अन्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

सुप्रभात

ओर-छोर नहीं
ब्रह्माण्ड का
अनंत तारे और सितारे
अनंत आकाशगंगा और ब्लैक होल
अनंत ऊंचाई और गहराई
अनंत स्वप्न और यथार्थ
अनंत जीवन और मृत्यु
ओर-छोर नहीं ब्रह्मांड का
एक अनंत यात्रा जैसे
जीवन का विस्तार
और मृत्यु के कुछ हिस्से
छोटे से हिस्से में
हर बार हार जाती है
मृत्यु !

– मोहन सगोरिया

जिम्बाब्वे दौरे के लिए टीम इंडिया का ऐलान

- **टी-20 में पहली बार शुभमन गिल को कप्तानी**

मुंबई (एजेंसी)। अगले महीने होने जा रहे जिम्बाब्वे दौरे के लिए भारतीय टीम का ऐलान कर दिया गया है। बीसीसीआई ने सोमवार को 15 सदस्सीय टीम घोषित की। यह टीम 6 जुलाई से 14 जुलाई तक हरारे स्पोर्ट्स क्लब में 5 टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी। टी-20 वर्ल्ड कप में ट्रैवलिंग रिजर्व रहे शुभमन गिल को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया था, हालांकि बोर्ड ने उपकप्तान के नाम का ऐलान नहीं किया है। शुभमन गिल भारत के ओवरऑल 46वें कप्तान बने हैं। वहीं, टी-20 फॉर्मेट में भारतीय टीम के 14वें कैप्टन हैं।

जबलपुर एयरपोर्ट और मदन महल फ्लायओवर वीरांगना रानी दुर्गावती के नाम से जाना जाएगा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

वीरांगना रानी दुर्गावती के विविध पक्षों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वीरांगना रानी दुर्गावती ने न केवल अकबर की सेना को तीन बार परास्त किया अपितु सुशासन और जल प्रबंधन के क्षेत्र में भी कई नवाचार करते हुए क्षेत्र को जनोन्मुखी शासन व्यवस्था प्रदान की। जबलपुर एयरपोर्ट और मदन महल से होकर गुजरने वाला फ्लायओवर वीरांगना रानी दुर्गावती के नाम से जाना जाएगा। गढ़ में रानी दुर्गावती के नाम पर स्टेडियम के लिए भी भारत सरकार से अनुमति दिलाने का प्रयास भी राज्य शासन द्वारा किया जाएगा। क्षेत्र के तालाबों व जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार भी प्राथमिकता से करेंगे। यह उनकी वीरता और पराक्रम को आदरांजलि है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अकबर का दौर कठिनकाल था, एक ओर जहाँ महाराणा प्रताप उससे संघर्ष कर रहे थे, वहीं वनांचल में वीरांगना रानी दुर्गावती ने अकबर की सेना से लोहा लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वीरांगना रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वीरांगना रानी दुर्गावती के जीवन, उनके पराक्रम और सुशासन के लिए किए गए नवाचारों को देश-दुनिया के सामने लाने के उद्देश्य से इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल करने के साथ-साथ इन विषयों पर सेमिनार भी आयोजित किए जाएंगे। वीरांगना रानी दुर्गावती के विविध पक्षों को सामने लाने के लिए 5 लाख रूपए का पुरस्कार भी घोषित किया गया है। जबलपुर सहित प्रदेश में प्रतिमाह सांस्कृतिक एवं बौद्धिक आयोजन भी होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रानी दुर्गावती के 500 वें जन्मशताब्दी वर्ष में उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता ज्ञापित करने के उद्देश्य से ही पहली कैबिनेट जबलपुर में आयोजित की गई। भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं के सम्मान व रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले वीरांगना रानी दुर्गावती जैसे व्यक्तित्वों के जीवन संघर्ष के अनछुए पहलुओं से जनसामान्य को परिचित कराने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में निरंतर कार्य जारी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वीरांगना रानी दुर्गावती और रानी अवंतीबाई लोधी ऐतिहासिक रूप से नारी शक्ति की अभिव्यक्ति रही हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि युद्ध हो या शासन व्यवस्था महिलाएं कहीं भी पीछे नहीं हैं। इसी क्रम में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने जनजातीय प्रतिभा का प्रकटीकरण करते हुए भारतीय महिलाओं की क्षमता से देश ही नहीं दुनिया को अवगत कराया है। राज्य सरकार कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए समर्पित है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 42.5 °c

न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 25 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अयोध्या राम मंदिर पहली बारिश में टपकने लगा

मुख्य पुजारी बोले- जहां रामलला, वहां पानी भरा; इंतजाम नहीं हुए तो दर्शन बंद होंगे

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या का राम मंदिर पहली ही बारिश में टपकने लगा। मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने कहा- गर्भगृह में, जहां रामलला विराजमान हैं, वहां भी पानी भर गया। अगर एक-दो दिन में इंतजाम नहीं हुए, तो दर्शन और पूजन की व्यवस्था बंद करनी पड़ेगी। उन्होंने बताया- शनिवार रात 2 से 5 बजे तक तेज बारिश हुई। इसके बाद मंदिर के गर्भगृह के सामने मंडप में 4 इंच तक पानी भर गया। मंदिर के अंदर लोगों को डर था कि कहीं बिजली का करंट न उतर आए। इसलिए सुबह 4 बजे होने वाली आरती टार्च की रोशनी में करनी पड़ी। सुबह 6 बजे की आरती भी ऐसे ही हुई।

- **छोटे मंदिरों में भी भरा पानी**- आचार्य सत्येंद्र दास ने कहा- गर्भगृह के अलावा भी जो छोटे मंदिर बने हैं, वहां भी पानी भर गया है। इस पर ध्यान देना चाहिए कि जो बना है, उसमें क्या कमी रह गई? एक तो राम मंदिर से बारिश का पानी निकलने की जगह नहीं है। ऊपर से पानी भी चूने लगा, इससे अव्यवस्था हुई।
- **अयोध्या में 67 एमएम बारिश हुई** - अयोध्या में शनिवार-रविवार की रात 67 एमएम बारिश हुई, जिससे पूरे शहर में जगह-जगह पानी भर गया। सड़कें धंस गईं। 6 महीने पहले बने अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन की करीब 20 मीटर लंबी बाउंड्री वॉल भी ढह गई।
- **पहली मंजिल के निर्माण के चलते अंदर आया पानी**- जलनिकासी ठीक नहीं होने के चलते यह दिक्कत हो रही हैं। पुजारी के मुताबिक, इसको जितनी जल्दी ठीक करवा लिया जाए, उतना अच्छा है। पानी को रात 10 बजे तक सुखाया जा सका। ये पानी क्यों भरा? इसके जवाब में उन्होंने बताया- पहली मंजिल पर निर्माण जारी है। वहां रॉड लगाने के लिए होल (छेद) छूटे हुए हैं। वहीं से मंदिर के अंदर पानी आया था।

अयोध्या में भाजपा की हार के बाद 5 बड़े बदलाव

अयोध्या (एजेंसी)। जिस अयोध्या में राम मंदिर बना, वही लोकसभा सीट भाजपा के हाथ से निकल गई। हार क्यों हुई... इसकी बड़ी वजह लोगों में नाराजगी सामने आई। फिलहाल, सरकार और प्रशासन एक्शन में आ गया है। 20 दिनों में प्रशासन ने 5 बड़े

फैसले वापस ले लिए। अब पुराने मंदिरों को तोड़ा नहीं जाएगा। शहर में अयोध्या के लोगों की गाड़ियां बिना किसी रोक-टोक के आ-जा सकेंगी। पहले सिर्फ नेताओं और अधिकारियों की गाड़ियां एंट्री पाती थीं। मतलब, वीआईपी कल्चर खत्म हो गया है। इस कदम को भाजपा के डैमेज कंट्रोल की तरह देखा जा रहा है।

5 बड़े बदलाव

● एयरो सिटी पर रोक। ● अयोध्या जिले के वाहनों को अयोध्या धाम में मिलेगी एंट्री। ● फ्लाई ओवर का प्रस्ताव कैंसिल। ● विस्थापित दुकानदारों को 30 प्रतिशत छूट देकर, बिना ब्याज दुकानों का आवंटन। ● 41 गांव नगर निगम में शामिल, मूलभूत सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी।

परीक्षा में फेल होने पर मां ने लगाई फटकार, गुस्साए युवक ने छोटे भाई संग मां को भी मार डाला

चेन्नै (एजेंसी)। तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले में दोहरे हत्याकांड का सनसनीखेज मामला सामने आया है। जिले के उत्तरी उपनगर तिरुवोत्तियुर में 20 वर्षीय कॉलेज छात्र ने गुरुवार को अपनी मां और छोटे भाई को मार डाला। युवक ने अपने घर पर सोते समय 45 वर्षीय मां और 15 वर्षीय छोटे भाई की चाकू घोंपकर हत्या कर दी और उनका गला रेत दिया। वेलाचेरी के एक कॉलेज में बीएससी डेटा एनालिस्ट के तीसरे वर्ष के छात्र नितेश ने फिर उनके शवों को अलग-अलग प्लास्टिक बैग में लपेटा और उन्हें रसोई में छोड़कर भाग गया।

मौसी को किया मैसेज- पुलिस ने बताया कि हत्या का पता तब चला जब नितेश ने पड़ोस में रहने वाली अपनी मौसी महालक्ष्मी को मोबाइल पर मैसेज भेजा, जिसमें लिखा था- मैंने अपना मोबाइल फोन, घर की चाबी और एक छोटा सा टेप वाला बैग छोड़ा है। तुरंत मेरे घर आ जाओ। हालांकि नितेश ने शुक्रवार रात करीब 9.30 बजे संदेश भेजा था, लेकिन महालक्ष्मी को शनिवार रात करीब 12.30 बजे मैसेज दिखाई दिया।

प्लास्टिक बैग में रखे थे शव

पुलिस ने बताया कि महालक्ष्मी तुरंत पद्मा के घर पहुंची, लेकिन घर के फर्श और दीवारों पर खून के छींटे पड़े थे और हर जगह तीखी गंध थी। फिर वहां दो प्लास्टिक बैग थे जिनमें उसकी बहन पद्मा और भतीजे संजय के शव थे। सूचना मिलने पर पुलिस, फॉरेंसिक विशेषज्ञ और एक खोजी कुत्ता घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने नितेश के मोबाइल फोन टावर लोकेशन का उपयोग करके उसकी गतिविधियों पर नजर रखी और आखिरकार उसे तिरुवोत्तियुर समुद्र तट के पास खोज निकाला।

प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति पर विपक्ष का प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। 18वीं लोकसभा का पहला सत्र आज (24 जून) से शुरू हुआ। विपक्षी सांसदों ने भर्तृहरि महताब को प्रोटेम स्पीकर बनाए जाने पर विरोध-प्रदर्शन किया। सांसदों ने संसद परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने संविधान की कॉपी लहराई और संविधान बचाओ के नारे लगाए।

विपक्षी सांसदों ने कहा कि सरकार ने नियमों के खिलाफ जाकर प्रोटेम स्पीकर नियुक्त किया है। नियम के मुताबिक, कांग्रेस के के.सुरेश को प्रोटेम स्पीकर बनाया जाना था, क्योंकि वे 8 बार के सांसद हैं। महताब तो 7 बार के ही सांसद हैं। प्रदर्शन में सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और सांसद राहुल गांधी भी शामिल हुए। राहुल गांधी ने प्रोटेस्ट के बाद कहा- प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह, जो आक्रमण संविधान पर कर रहे हैं, वो हमारे लिए स्वीकार्य नहीं है। हम ये आक्रमण नहीं होने देंगे। हिंदुस्तान के संविधान को कोई शक्ति नहीं छू सकती।

दमोह में होमगार्ड जवान, बेटे और भतीजे की हत्या

जवान का तलवार से कत्ल किया; बेटे-भतीजे को बीच सड़क पर गोलियां मारीं

दमोह (नप्र)। दमोह में होमगार्ड जवान, उसके बेटे और भतीजे की हत्या कर दी गई। मामला जिले के देहात थाना क्षेत्र के बांसा तारखेड़ा गांव का है। मृतक और तीन आरोपी एक ही परिवार के हैं।

एसपी श्रुतकीर्ति सोमवंशी ने बताया कि होमगार्ड जवान रमेश विश्वकर्मा (50) का उसके ही परिवार के लोगों से विवाद चल रहा था। करीब एक महीने पहले भी उनके बीच विवाद हुआ था। आरोपियों ने सोमवार को रमेश पर तलवारों से हमला कर दिया।

घटना के वक्त रमेश का बेटा उमेश (23) और भतीजा विक्की (24) दमोह से बाइक से लौट रहे थे। आरोपियों ने उनको बीच सड़क पर गोली मार दी। दोनों की सड़क पर ही मौत हो गई।

चचेरे भाई से फोन पर कहा था- आज हत्या करूंगा

रमेश के चाचा राजेंद्र विश्वकर्मा ने बताया कि सुबह करीब 6 बजे मेरे बेटे सौरभ के मोबाइल पर आरोपी का फोन आया था। उसने सौरभ से कहा था कि आज रमेश और उनके परिवार के लोगों की हत्या करेगा। राजेंद्र ने बताया कि उमेश और विक्की कोचिंग पढ़ने दमोह गए हुए थे। राजेंद्र ने सौरभ से कहा कि 100 नंबर पर पर पुलिस को सूचना दे दो, ताकि उमेश और विक्की को पुलिस वहीं रोक ले, लेकिन 100 नंबर पर कॉल रिसीव नहीं हुआ।

सोना खनन करने वाला देश का चौथा राज्य बनेगा राजस्थान

बांसवाड़ा में खनन के लिए हुई खदान की नीलामी, टन भंडार मिला

जयपुर/बांसवाड़ा (एजेंसी)। अब राजस्थान की धरती सोना उगलेगी। राजस्थान सरकार ने बांसवाड़ा में स्वर्ण (सोने) और अयस्क खनन के लिए भुखिया-जगपुरा खनन ब्लॉक की नीलामी की प्रक्रिया पूरी कर ली है।

इसका लाइसेंस रतलाम की सैयद ओवैस अली फर्म को मिला है। इसके साथ ही देश में कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और झारखंड के बाद राजस्थान चौथा राज्य होगा, जहां सोने का खनन होगा। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार इस क्षेत्र में सोने के धातु की मात्रा टन आंकी गई है।

रतलाम की फर्म को सोने के खनन का लाइसेंस- खनिज अभियंता गौरव मीणा ने मीडिया को बताया कि बांसवाड़ा के घाटोल उपखंड में खदान के लिए दो ब्लॉक भूकिया-जगपुरा आवंटित किए गए थे। गत दिनों दोनों ब्लॉक के लिए तकनीकी बिड खुलने के बाद अब खनन के लिए लाइसेंस दे दिया गया है। भुखिया-जगपुरा स्वर्ण ब्लॉक के माइनिंग लाइसेंस के लिए बड़ी कंपनियों के बीच कड़ी स्पर्धा रही। इसमें रतलाम की कंपनी ने 65.30 प्रतिशत की बोली लगाई और सोने के खनन के लिए ब्लॉक अपने नाम किया। रतलाम की कंपनी सैयद ओवैस अली ने 65.30 प्रतिशत की बोली लगाई और स्वर्ण खनन के लिए ब्लॉक अपने नाम किया।

- **कांकरिया गारा ब्लॉक का भी लाइसेंस जल्द**- राजस्थान के बांसवाड़ा में सोने के खनन के लिए आवंटित दो ब्लॉक में से भूखिया-जगपुरा के लिए लाइसेंस दे दिया गया है, जबकि दूसरे ब्लॉक कांकरिया गारा गोल्ड के कंपोजिट लाइसेंस के लिए 5 कंपनियां आई हैं। इसमें अहमदाबाद की हीराकुंड नेचुरल रिसोर्सेस लिमिटेड, मुंबई की पोद्दार डायमंड प्राइवेट लिमिटेड, रतलाम की ओवैस मेटल एंड मिनरल्स प्रोसेसिंग लिमिटेड, उदयपुर की हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड और कानपुर की जेके सीमेंट लिमिटेड में प्रतिस्पर्धा है।
- **सोने के भंडार, मिलेगा रोजगार**- भू-वैज्ञानिकों के मुताबिक इस क्षेत्र में 940.26 हेक्टेयर क्षेत्रफल में 113.52 मिलियन टन स्वर्ण अयस्क का आरंभिक आकलन किया गया है। इसमें सोने के धातु की मात्रा टन आंकी गई है। वहीं कांकरिया गारा में 205 हेक्टेयर में 1.24 मिलियन टन स्वर्ण अयस्क संभावित है।

एमपीएल 2024 में

स्टेडियम के बाहर पत्थरबाजी, पुलिसकर्मी समेत दो घायल

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के श्रीमंत माधवराव सिंधिया क्रिकेट स्टेडियम में रविवार रात एमपीएल-2024 के फाइनल मैच के दौरान हंगामा हो गया। बड़ी संख्या में पहुंचे दर्शकों ने स्टेडियम में एंट्री नहीं मिलने पर पथराव कर दिया। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। झड़प में एक युवक और पुलिसकर्मी घायल हो गए। रविवार को प्रतियोगिता का अंतिम व निर्णायक मुकाबला भोपाल लेपर्ड और जबलपुर लॉयंस के बीच खेला गया। जबलपुर लॉयंस ने भोपाल लेपर्ड्स को 216 रन पर समेटकर खिताब जीत लिया। इससे पहले भोपाल लेपर्ड ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। जबलपुर लॉयंस ने 20 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 249 रन बनाए। अभिषेक पाठक ने 62 बॉल पर 12 चौके और 11 छक्कों की मदद से 142 रन बनाए। अभिषेक और अर्पित गौड़ ने पहले विकेट के लिए 5.5 ओवर में 84 रन की पार्टनरशिप की। अर्पित ने 16 गेंदों में 43 रन बनाए। इनमें 3 चौके और 4 छक्के शामिल हैं।

कुर्सियां खाली होने के बावजूद एंट्री बंद की- दरअसल, मैच देखने के लिए एमपीसीए (मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन) ने ऑनलाइन मुफ्त टिकट की व्यवस्था की थी। इसके चलते स्टेडियम के बाहर बड़ी संख्या में लोग पहुंच गए। स्टेडियम के अंदर कुर्सियां खाली होने के बाद भी अफसरों ने एंट्री बंद कर दी।

झांसी में ब्यूटीपार्लर में सज रही दुल्हन की हत्या

झांसी (नप्र)। झांसी में ब्यूटी पार्लर के अंदर सज रही दुल्हन की गोली मारकर हत्या कर दी गई। कुछ ही घंटे बाद उसकी शादी थी। वह तैयार होने गई थी। उसके पड़ोस का युवक ब्यूटी पार्लर पहुंचा। दुल्हन से बोला- मेरे साथ चलो। दुल्हन ने मना कर दिया।

कुछ देर बाद ब्यूटी पार्लर के दरवाजे का शीशा तोड़कर फिर अंदर आया। बोला- तुम मेरी नहीं हुई तो किसी और की नहीं होने दूंगा। तमंचा निकाला और दुल्हन काजल के सीने में 2 गोली मारी और फरार हो गया।

काजल, मृतका

वारदात के बाद वहां अफरा-तफरी मच गई। दुल्हन काजल के परिजन मौके पर पहुंचे। उसे झांसी मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना रविवार रात 10 बजे सीपरी बाजार की है। पड़ोसियों ने बताया कि आरोपी दीपक एकतरफा प्यार करता था। उसे पता था कि काजल ब्यूटी पार्लर में सजने जाएगी। 5 घंटे से वह ब्यूटी पार्लर के बाहर ही टहलता रहा।

दुल्हन के पड़ोस में रहता था आरोपी दीपक

झांसी से सटे मध्य प्रदेश के दतिया के राजकुमार अहिरवार की बेटी काजल (20) की रविवार को शादी थी। पड़ोसी युवक दीपक अहिरवार काजल को पसंद करता था। शादी करना चाहता था। मगर, काजल और उसका परिवार शादी के लिए राजी नहीं था। परिवार ने काजल की शादी झांसी में चिरगांव के सिमथरी गांव के रहने वाले राज से तय कर दी। रविवार को झांसी के खोडन में स्थित निशा गार्डन में शादी होनी थी। काजल अपने परिवार के साथ रविवार शाम को ही मैरिज हॉल पहुंच गई थी।

बहनों के साथ ब्यूटी पार्लर गई थी काजल

निशा गार्डन से करीब 200 मीटर दूर एक ब्यूटी पार्लर में काजल शाम 5 बजे तैयार होने पहुंची। साथ में उसकी 4 चचेरी बहन नेहा, मुस्कान, वंदना और अनुष्का भी थीं।

योगी सरकार का बड़ा फैसला

प्रदेश में होगी 42 हजार होम गार्ड की भर्ती

लखनऊ (एजेंसी)। सरकार की ओर से प्रदेश के युवाओं को रोजगार देने के मुहिम के तहत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ा फैसला लेते

हुए 42000 होमगार्ड स्वयंसेवकों की भर्ती के आदेश दिए हैं। उन्होंने जल्द हजारों होमगार्ड्स के सेवानिवृत्त होने के दृष्टिगत जल्द भर्ती प्रक्रिया को शुरू करने को कहा। साथ ही, होमगार्ड्स को आपदा मित्र के रूप में तैनात करने के लिए नियमावली बनाने का निर्देश भी दिया।

एक ही मोटरसाइकिल पर पांच लोग, डंपर की चपेट में आने से सभी की मौत

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में सोमवार को एक भीषण सड़क हादसा हो गया। गंगानगर के सराय ममरेज थाना क्षेत्र में सोरू पेट्रोल पंप के पास डंपर की चपेट में आने से मोटरसाइकिल सवार पांच लोगों की मौत हो गई। थाने के उपनिरीक्षक सौमित्र ने बताया कि सोमवार पूर्वाह्न करीब साढ़े दस बजे सोरू पेट्रोल पंप के पास एक तेज रफ्तार डंपर की चपेट में आने से मोटरसाइकिल पर सवार दो महिलाओं और दो बच्चों समेत पांच लोगों की मौत हो गई।

सरोगेसी से मां बनने वाली महिला कर्मचारी भी ले सकेंगी मैटरनिटी लीव, केंद्र ने बदले नियम

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने शासकीय महिला कर्मचारियों को सरोगेसी से मां बनने पर भी मैटरनिटी लीव देने का फैसला किया है। इसके लिए सरकार ने 50 साल पुराने नियम में बदलाव करते हुए, ऐसी स्थिति में 180 दिनों का मातृत्व अवकाश देने की अनुमति दी है।

साथ ही पिता भी 15 दिन का पितृत्व अवकाश ले सकेंगे। कार्मिक मंत्रालय ने केंद्रीय सिविल सेवा (अवकाश) में संशोधित नियमों की अधिसूचना जारी करते हुए इसकी जानकारी दी। जारी अधिसूचना में बताया गया कि सरोगेसी के मामले में, सरोगेट मां, साथ ही दो से कम जीवित बच्चों वाली कमीशनिंग मां को 180 दिनों का मातृत्व अवकाश दिया जा सकता है, यदि दोनों में से कोई एक या दोनों सरकारी कर्मचारी हैं।

बच्चे की देखभाल के लिए मिलेगा अवकाश

केंद्रीय सिविल सेवा (अवकाश) (संशोधन) नियम, 2024 के अनुसार, सरोगेसी के मामले में, दो से कम जीवित बच्चों वाली कमीशनिंग मां को बाल देखभाल अवकाश दिया जा सकता है। कार्मिक मंत्रालय ने संशोधित नियमों में स्पष्ट किया है कि सरोगेट मां का अर्थ वह महिला है, जो कमीशनिंग मां की ओर से बच्चे को जन्म देती है और इसी तरह कमीशनिंग पिता का अर्थ सरोगेसी के माध्यम से पैदा हुए बच्चे के इच्छुक पिता से है।

- **अब तक नहीं था इससे जुड़ा कोई नियम** - गौरतलब है कि अब तक सरोगेसी के जरिए बच्चे के जन्म की स्थिति में महिला सरकारी कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश देने का कोई नियम नहीं था। नए नियमों के अनुसार, सरोगेसी के माध्यम से पैदा हुए बच्चे के मामले में, कमीशनिंग पिता, जो एक पुरुष सरकारी कर्मचारी है और उसके दो से कम जीवित बच्चे हैं, उसे बच्चे की डिलीवरी की तारीख से 6 महीने की अवधि के भीतर 15 दिनों का पितृत्व अवकाश दिया जा सकता है।

संसद सत्र के पहले दिन पीएम मोदी पर राहुल-खड़गे का हमला, कहा- संविधान पर आक्रमण मंजूर नहीं

नईदिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा की कार्यवाही शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन पर कांग्रेस पर निशाना साधा। वहीं कांग्रेस की तरफ से पीएम मोदी पर पलटवार किया गया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी और जयराम रमेश ने प्रधानमंत्री पर हमला बोला है। राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी, अमित शाह जो आक्रमण संविधान पर कर रहे हैं, वो हमारे लिए स्वीकार्य नहीं है। वहीं मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि संविधान को बचाने के लिए हमने जो कोशिश की थी उसमें जनता हमारे साथ है। लेकिन मोदी जी ने संविधान को तोड़ने की कोशिश की। जबकि कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि पीएम के पास बोलने के लिए कुछ भी नया नहीं था और हमेशा की तरह उन्होंने अपने संबोधन मुद्दों को भटकाने का प्रयास किया है।

इंदौर में 8वीं मंजिल से कूदी टीसीएस की प्रोजेक्ट मैनेजर

बीसीएम हाइट्स से लगाई छलांग; खुदकुशी से पहले किया मैसेज- आई एम सॉरी पापा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के विजय नगर इलाके में एक युवती ने 8वीं मंजिल के कूदकर खुदकुशी कर ली। मृतक युवती की पहचान सुरभि जैन (37) के रूप में की गई है। वह टीसीएस कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर थी। सुसाइड से पहले उसने अपने पापा को फोन पर मैसेज किया। जिसमें उसने लिखा - आई एम सॉरी पापा।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और एफएसएल की टीम मौके पर पहुंच गई। टीआई सीबी सिंह के मुताबिक सोमवार दोपहर में सूचना मिली थी कि एक युवती ने बीसीएम हाइट्स की 8वीं मंजिल से छलांग लगा दी है। जिससे उसकी मौत हो गई है।

युवती का मोबाइल बिल्डिंग की छत पर ही पड़ा मिला है। फिलहाल आत्महत्या का कारण सामने नहीं आया है। पुलिस हर एंगल से मामले की जांच में जुटी है।

डिप्रेशन में थी युवती, मानसिक इलाज चल रहा था- युवती के पिता का नाम अशोक कुमार जैन है। सुरभि उनकी एकलौती बेटी थी। पिता का कहना है कि सुरभि का मानसिक इलाज चल रहा था। वह डिप्रेशन में थी। सोमवार को वह ऑफिस के लिए घर से निकली थी। फिर घर नहीं पहुंची। बताया जा रहा है कि वह कार से बीसीएम हाइट्स पहुंची थी। फिर लिफ्ट से छत पर गई और वहां से नीचे कूद गई।

शादीशुदा थी सुरभि, कुछ समय पहले हुआ था तलाक- सुरभि जैन अनूप नगर एमआईजी में रहती थी। पिता के मुताबिक सुसाइड से पहले उसने अपने सभी जेवर पिता को सौंप दिए थे। बताया जा रहा है कि सुरभि शादीशुदा थी। कुछ समय पहले उसका पति से तलाक हो गया था।

महिला ने प्रेमी से पति को पिटवाया

घर चलाने पति गांव से शहर आया; पत्नी का दूसरे से शुरू हुआ अफेयर

गुना (नप्र)। गुना में रिश्ते को तार-तार कर देने वाली अनोखी वारदात सामने आई है। एक महिला ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति और रिश्तेदार के साथ गंभीर रूप से मारपीट की और बाद में प्रेमी के साथ भाग गई। शादी समारोह में यह पूरी घटना हुई। महिला के पति और रिश्तेदार को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

घटनाक्रम के मुताबिक अशोकनगर जिले की पिपरई तहसील के मूड़रा कला निवासी अजय कोरी 21 जून को कोल्हुपुरा स्थित कबीरवाणी आश्रम में आयोजित एक शादी समारोह में शामिल होने पहुंचा था। इसी दौरान अजय की पत्नि सीता कोरी इंदौर से आ रही थी, जिसे लेने के लिए अजय और उसका चचेरा भाई लल्लू कोरी रुठियाई रेलवे स्टेशन पहुंचे। जहां वापस लौटने के दौरान अजय का आमना-सामना दिनेश कोरी नामक शख्स से हुआ, जो सीता का प्रेमी बताया जा रहा है। इसलिए अजय का उसकी पत्नि से रास्ते में मुंहवाद हुआ। कुछ देर बाद कोल्हुपुरा स्थित समारोह स्थल पर पहुंचने पर दिनेश कोरी मौके पर पहुंच गए। उसने अपने एक अन्य साथी और अजय की पत्नि सीता के साथ मिलकर अजय कोरी और लल्लू कोरी पर लोहे के सरिया से हमला कर दिया। मारपीट की घटना में अजय कोरी और लल्लू कोरी को गंभीर रूप से चोटें आई हैं, जिन्हें जिला अस्पतल में भर्ती कराया गया। घटना के बाद दिनेश कोरी और अजय की पत्नि सीता फरार हो गए हैं।

बताया जा रहा है कि अजय कोरी छोटे से गांव में रहता है, लेकिन उसकी पत्नि शहर रहने की जिद कर रही थी। कुछ दिन पहले ही अजय मजदूरी करने के लिए गुना आ गया और किराये के कमरे में रह रहा था, तभी उसकी पत्नि और दिनेश कोरी के बीच प्रेम प्रसंग शुरु हो गया। अजय को संदेह हुआ और वह कमरा खाली कर अपने गांव चला गया। तबसे अजय कोरी और सीता के बीच गृहस्थी जीवन में खटास पड़ गई और अंत में मारपीट की यह जघन्य वारदात सामने आई है। पुलिस ने अब तक अजय कोरी की शिकायत पर केस दर्ज नहीं किया है।

धार में महिला को सरेआम लाठी से पीटा

देवर-जेठ समेत 6 आरोपी गिरफ्तार; चार लोगों ने पकड़ा, सरपंच ने मारे थे डंडे

धार (नप्र)। धार जिले में महिला को सरेआम लाठी से पीटने के मामले में पुलिस ने सभी 7 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। इनमें महिला के देवर और जेठ शामिल हैं। मुख्य आरोपी सरपंच को पहले ही पकड़ लिया गया था।

दरअसल, शुक्रवार को एक वीडियो सामने आया, जिसमें एक महिला को सरेआम लाठी से पीटा जा रहा है। महिला चीखती है, चिल्लाती है। लेकिन, कोई उसे बचाने आगे नहीं आता। लोग तमाशबीन बने रहे। वीडियो में दिख रहा है कि चार लोग महिला को पकड़े हैं और एक शख्स उसकी लाठी पिटाई कर रहा है। वो एक के बाद एक कई बार उसे लाठी से मारता है। लोग घटना का वीडियो बनाते नजर आ रहे हैं। ये वीडियो धार जिले के टांडा थाना क्षेत्र के एक गांव का है। पुलिस ने मुख्य आरोपी सरपंच नूर सिंह पिता जाम सिंह भूरिया को शुक्रवार को ही गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद पुलिस ने रातभर गंधवानी और टांडा क्षेत्र में अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर अन्य 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया है। पिटाई का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने रात भर छापामार कार्रवाई कर आरोपियों को गिरफ्तार किया।

दूसरे युवक के साथ चली गई थी, इसलिए पीटा- बताया जा रहा है कि गंधवानी की रहने वाली 28 वर्षीय महिला से आरोपियों ने मारपीट की थी। महिला 8 दिन पहले गुजरात से मक्का बोने के लिए ससुराल आई थी। गुजरात में काम करने के दौरान उसकी पहचान कालू नाम के युवक से हुई थी। 19 जून को महिला ससुराल में गुजरात जाने का कहकर निकली और कालू के साथ कहीं चली गई। दोनों पक्षों में बातचीत के बाद 20 जून को कालू महिला को गांव छोड़कर चला गया। जिसके बाद यहां आंगनबाड़ी केंद्र के सामने परिजन और सरपंच ने महिला से मारपीट की। पुलिस ने महिला के देवर, जेठ और गांव के सरपंच समेत 6 लोगों को गिरफ्तार किया है

यूपी एसटीएफ की पूछताछ में भोपाल के सुनील का खुलासा

पर्चा लीक करने के बदले दस लाख मिले, मशीन पार्ट्स के बीच छिपाकर निकाला था पेपर

भोपाल (नप्र)। यूपी में समीक्षा अधिकारी (आरओ) और सहायक समीक्षा अधिकारी (एआरओ) के पेपर लीक मामले में एसटीएफ ने बड़ा खुलासा किया है। पेपर भोपाल की एक प्रिंटिंग प्रेस में छपे थे। इस मामले में यूपी एसटीएफ ने प्रिंटिंग प्रेस के मैकेनिकल इंजीनियर सुनील रघुवंशी समेत आधा दर्जन लोगों को प्रयागराज से गिरफ्तार किया है।

यूपी एसटीएफ को सुनील ने बताया है कि दस लाख रुपए लेकर उसने पर्चा लीक किया था। प्रिंटिंग मशीन के पार्ट्स में खराबी बताकर उसने एक पुर्जे को निकाल लिया था। इसे रिपेयर कराने के नाम पर उसने पार्ट्स को बड़े बॉक्स में कागजों में लपेटकर पैक किया। इसी के बीच उसने मौका देखकर पेपर छिपा दिया था। इस तरह आसानी से वह पेपर को बाहर निकाल लाया था। इसके बाद उसने पेपर साथियों की मदद से लीक किया।

11 फरवरी 2024 को हुई थी परीक्षा- जानकारी के मुताबिक, 11 फरवरी 2024 को आर/एआरओ का पेपर इलाहाबाद के एग्जाम सेंटर विशप जॉनसन गर्ल्स स्कूल और कॉलेज से आउट कर लिया गया था। एसटीएफ इस मामले में 10 आरोपियों की गिरफ्तारी पहले की जा चुकी है। एसटीएफ ने अपनी जांच के दायरे में भोपाल की प्रिंटिंग प्रेस को भी लिया था। क्योंकि पेपर यही पर प्रिंट हुए थे। एसटीएफ जांच में पुलिस भर्ती में पहले गिरफ्तार किए गए मास्टर माइंड राजीव नयन मिश्रा की भी कुछ दिन तक भोपाल में रहने की बात सामने आई थी।

इसके बाद प्रेस के मैकेनिकल इंजीनियर बिलखिरिया भोपाल के रहने वाले सुनील रघुवंशी पुत्र रामबाबू रघुवंशी को गिरफ्तार किया गया। सुनील के बताने पर बताने पर मधुबनी बिहार के रहने वाले सुभाष प्रकाश,

इलाहाबाद के रहने वाले विशाल दुबे और संदीप पांडे, बलिया के रहने वाले विवेक उपाध्याय और बिहार के रहने वाले अमरजीत शर्मा को गिरफ्तार किया।

एक ही कॉलेज में पढ़ते थे विशाल और सुनील- जांच में सामने आया कि राजीव नयन मिश्रा, सुभाष प्रकाश, विशाल दुबे और सुनील रघुवंशी (प्रिंटिंग प्रेस कर्मी) अलग-अलग प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ते थे। विशाल दुबे और सुनील रघुवंशी साल 2014 से 2017 तक इंजीनियरिंग कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे।

मैकेनिकल इंजीनियर के पद पर काम करता था सुनील- सुनील रघुवंशी प्रिंटिंग प्रेस में मैकेनिकल इंजीनियर के पद पर नौकरी करने लगा और सुभाष प्रकाश प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज में नौकरी करने लगा। विशाल दुबे और राजीव नयन मिश्रा प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेजों में इच्छुक छात्रों का एडमिशन कराने का काम करते थे।

इसी सिलसिले में इन दोनों की सुभाष प्रकाश से जान-पहचान और दोस्ती हो गई थी। विशाल दुबे को जब पता चला कि उसके साथ का पढ़ा हुआ सुनील रघुवंशी प्रिन्टिग प्रेस में नौकरी करता है तो यह बात विशाल दुबे ने मास्टरमाइन्ड राजीव नयन मिश्रा उर्फ राहुल और सुभाष प्रकाश को बताई। इस पर राजीव नयन मिश्रा उर्फ राहुल ने इन दोनों से कहा कि तुम लोग सुनील रघुवंशी के संपर्क में रहो और उत्तरप्रदेश में होने वाली किसी परीक्षा का प्रश्न-पत्र छपने के लिए आता है तो इस बारे में बताने और प्रश्नपत्र को आउट कराने के लिए सुनील रघुवंशी को तैयार करो।

पैसों का लालच देकर सुनील को तैयार किया था- विशाल दुबे ने सुनील रघुवंशी को पैसे का लालच देते हुए कहा कि यूपी में होने वाली किसी भी परीक्षा का प्रश्न-पत्र छपने के लिए आता है तो तुरन्त बताना। पैसे के लालच में आकर सुनील रघुवंशी तैयार हो गया। कुछ समय के बाद सुनील रघुवंशी ने अपने साथी विशाल दुबे को बताया कि प्रिन्टिग प्रेस में एक प्रश्न-पत्र छपने के लिए आया है, जिसमें से एक प्रश्न-पत्र में 140 प्रश्न है और दूसरे में 40 प्रश्न हैं।

इसकी चर्चा विशाल दुबे ने अपने पूर्व परिचित राजीव नयन मिश्रा और सुभाष प्रकाश से की। चूंकि समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी के पदों पर भर्ती हेतु परीक्षा की प्रक्रिया चल रही थी और पूर्व के पैटर्न के अनुसार इस परीक्षा के एक प्रश्न पत्र में 140 व दूसरे में 40 प्रश्न ही पूछे जाते हैं, इस आधार पर राजीव नयन मिश्रा और विशाल दुबे ने सुभाष प्रकाश और सुनील रघुवंशी को बताया कि यह समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी की परीक्षा से संबंधित प्रश्न-पत्र छपने के लिए आया हुआ है।

ऐसे सुनील ने किया था पर्चा लीक

राजीव नयन मिश्रा, विशाल दुबे और सुभाष प्रकाश ने इस प्रश्न पत्र को आऊट कराने के लिए सुनील रघुवंशी को तैयार कर लिया। सुनील रघुवंशी उक्त प्रश्न-पत्र को उपलब्ध कराने के लिए 10 लाख रुपए की मांग की और अभ्यर्थियों को पेपर भोपाल में अपने सामने पढ़वाए जाने की शर्त रखी, ताकि व्यापक रूप से प्रश्न-पत्र वायरल न होने पाये, जिस पर राजीव नयन मिश्रा, विशाल दुबे और सुभाष प्रकाश तैयार हो गए।

सुनील रघुवंशी प्रश्न-पत्र की छपाई पर नजर रखने लगा और मशीन की मरम्मत के नाम पर आस-पास रहकर सही और सुरक्षित समय का इंतजार करने लगा। 3 फरवरी 2024 को सुनील मौका देखकर प्रिन्टिग प्रेस मशीन के एक पार्ट को बाहर ठीक कराने के नाम पर अपने पीने के पानी के बोतल के साथ लेकर प्रेस से आ गया। इन्हीं में प्रश्न-पत्र छुपाकर बाहर लाया था।

इन 6 आरोपियों की हुई गिरफ्तारी

सुनील रघुवंशी, भोपाल (मप्र)
सुभाष प्रकाश, मधुबनी (बिहार)
विशाल दुबे, प्रयागराज (यूपी)
संदीप पाण्डेय, प्रयागराज (यूपी)
अमरजीत शर्मा, गया (बिहार)
विवेक उपाध्याय, बलिया (यूपी)

बुधनी में महिला की दबंगई

बेटी के साथ युवक पर तलवार से किया हमला; बेटे ने भी एक अन्य को मारा चाकू

सीहोर (नप्र)। सीहोर जिले के बुधनी क्षेत्र में एक महिला ने अपनी बेटी के साथ युवक पर तलवार से हमला कर दिया। सिर में तलवार लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे नर्मदापुरम रेफर किया गया है। वारदात रविवार रात की है।

महिला की गुंडागर्दी का वीडियो भी सामने आ आया है। वीडियो में महिला अपनी बेटी, बेटे व कुछ साथियों के साथ हाथ में तलवार लेकर लोगों को धमकाती नजर आ रही है। वे लोगों को गालियां दे रहे हैं। पुलिस ने महिला उसकी बेटी सहित 4 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

शिकायत के लिए साथ चलने का कहने पर पीटा

बुधनी क्षेत्र में रहने वाले सूरज जाटव ने बताया कि क्षेत्र में चार दिन से बिजली की समस्या है। इस वजह से रविवार रात करीब 9 बजे मेरे पिताजी मोहल्ले के कुछ लोगों के साथ बिजली कंपनी शिकायत करने जा रहे थे। उन्होंने पास में रहने वाले रामदास गोड़ से भी साथ चलने को कहा। इस पर रामदास गालियां देने लगा।

उसके बेटे रमन गौड़ ने पिताजी से मारपीट कर दी। सूचना मिलने पर मैं मौके पर पहुंचा तो उन्होंने मेरे साथ भी मारपीट की। रमन ने मुझ पर चाकू से हमला कर दिया। इससे मेरे हाथ व चेहरे पर चोट लग गई।

मां-बेटी ने घर आकर किया हमला

सूरज ने बताया कि मैं इसकी शिकायत करने थाने पहुंचा। तभी रामदास की पत्नी रुक्मिणी उर्फ सुनीता, बेटी पूजा और बेटे रमन व अन्य साथियों के साथ हमारे घर आकर हंगामा करने लगी। मेरे पड़ोसी रामस्वरूप मौके पर पहुंचे तो पूजा और रुक्मिणी ने उन पर तलवार से हमला कर दिया। रामस्वरूप के सिर में गहरा घाव हो गया। पूजा रामस्वरूप को लातें मारी और उसके साथ मारपीट की।

कुछ देर लोगों को धमकाने के बाद वे वहां से चले गए। रामस्वरूप को उसके भाई गोपाल व अन्य लोगों ने बुधनी अस्पताल पहुंचाया। वहां से उसको नर्मदापुरम रेफर कर दिया गया है। सूरज की रिपोर्ट पर पुलिस ने रामदास, रुक्मिणी, रमन, पूजा के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इसमें दो आरोपी रामदास और रमन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। रुक्मिणी और पूजा फरार हैं।

भाई के बाइक से उतरते ही कर दिया हमला

हमले घायल हुए रामस्वरूप के भाई गोपाल जाटव ने बताया कि वह चौराहे पर पान की गुमटी चलाता है। पड़ोसी के घर पर जब कुछ लोग तलवार लेकर हमला करने पहुंचे तो मेरा बड़ा भाई रामस्वरूप भी मौके पर पहुंच गया। भाई के बाइक से पहुंचते ही रुक्मिणी और उसकी बेटी पूजा ने तलवार से हमला कर दिया।

दोनों ने भैया के सिर में तलवार मारी। उनके सिर में दो जगह घाव हो गए। हमारा किसी से विवाद नहीं था। गोपाल ने आरोप लगाया कि यह महिला क्षेत्र में लोगों को धमकाती है। अनैतिक गतिविधियां चलाती है।

प्रदेश के 32 जिलों में पहुंचा मानसून

24 घंटे में अलीराजपुर जिले के सोंडवा में 4.5 इंच बारिश, भोपाल में 1.7 इंच पानी गिरा

भोपाल (नप्र)। मानसून 3 दिन के अंदर मध्यप्रदेश में 32 जिलों में पहुंच गया है। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो अगले 5 दिन में यह पूरे प्रदेश को कवर कर लेगा। सबसे आखिरी में ग्वालियर-चंबल संभाग में पहुंचेगा। इस बार सामान्य से 106 प्रतिशत तक बारिश होने का अनुमान है। 25-26 जून को स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव होगा। इससे पूरा प्रदेश मानसूनी बौछार से भीग जाएगा।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में इंदौर, रायसेन के भीमबेटका और सांची, भिंड, विदिशा, अनूपपुर के अमरकंटक, डिंडोरी, बालाघाट, पांढुर्णा में आकाशीय बिजली चमकने या गिरने के साथ बारिश होने की संभावना जताई है।

इसी तरह नीमच, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर में हल्की गरज के साथ बारिश हो सकती है। बड़वानी, खरगोन, डिंडोरी, ग्वालियर, मुरैना, दतिया के रतनगढ़, श्योपुरकलां, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, हरदा, उदयगिरि, खंडवा, देवास, सीहोर, सागर, नरसिंहपुर, शहडोल, उमरिया, मंडला और भोपाल में भी दोपहर के बाद मौसम बदला रहेगा। तेज हवा के साथ बारिश हो सकती है।

पिछले 24 घंटे खासकर रविवार की रात में निवाड़ी जिले को छोड़ दें तो पूरे प्रदेश में ही आंधी, बारिश और गरज-चमक की स्थिति रही। 17 से अधिक जिलों में तेज बारिश भी हुई। सबसे ज्यादा बारिश अलीराजपुर जिले के सोंडवा में 116 मिमी यानी 4.5 इंच दर्ज की गई। भोपाल में 1.7 इंच बारिश हुई।

बड़वानी में सोमवार सुबह बच्चों को स्कूल छोड़ने जा रहे स्वास्थ्य कर्मचारी का बोलेरो वाहन गोई नदी के पुल पर आए पानी में फंस गया। सभी लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया।

गर्लफ्रेंड से दोस्ती की इसीलिए मार डाला

आरोपी बोला-बचपन का दोस्त मुझे डबल क्रॉस कर रहा था; ग्वालियर में मिला था शव

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के गिरवाई थाना क्षेत्र में युवक की हत्या कर दी गई थी। हत्यारा उसके बचपन का दोस्त निकला। पुलिस आरोपी को नागपुर से गिरफ्तार कर रविवार को ग्वालियर लेकर आई। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि दोस्त उसकी गर्लफ्रेंड पर 'चांस' मार रहा था इसलिए डंडे से पीट-पीट कर मार डाला।

20 जून की सुबह वीरपुर बांध पर युवक का लहूलुहान शव मिला था। जांच में पता चला कि युवक की हत्या लाठी-डंडे से पीट-पीटकर की गई है। उसकी पहचान बेलदारों का पुरा निवासी पंकज राज जाटव के रूप में हुई। पुलिस जांच में पता चला था कि 19 जून की रात 10 बजे पंकज बर्थ डे पार्टी में जाने की बात कहकर घर से निकला था। उसके परिवार में पत्नी, एक बेटा और बेटी है।

बचपन का दोस्त ही निकला मास्टरमाइंड

पुलिस की पड़ताल में पता चला कि आखिरी बार पंकज को पवन कुशवाह के साथ देखा गया था। दोनों बचपन के दोस्त थे। पवन भी मजदूरी करता था। पुलिस ने पवन की तलाश की तो वह लापता था। इस पर पुलिस का शक बढ़ गया। छानबीन में पता चला कि पवन नागपुर में किसी रिश्तेदार के यहां छिपा है। इसके बाद पुलिस टीम नागपुर पहुंची। शनिवार रात उसे पकड़ लिया गया। पवन ने वारदात कबूल कर ली है।

आरोपी ने बताया- कैसे किया मर्डर

आरोपी पवन ने पूछताछ में पुलिस को बताया, 'वारदात वाले दिन छोटे भाई के जन्मदिन की पार्टी के बहाने से पंकज को बुला ले गया था। उसे शराब पिलाई। जब नशा ज्यादा चढ़ गया तो पंकज को गिरवाई वीरपुर बांध की तरफ ले गया। यहां उसके सिर पर डंडा मारा। वह संभलता, उससे पहले लगातार कई वार किए। पत्थर, डंडे से उसे बेरहमी से सिर और चेहरे पर मारा। इसके बाद वहां से निकलकर महाराष्ट्र चला गया।

आरोपी बोला- मेरी गर्लफ्रेंड पर चांस मार रहा था

पवन कुशवाह ने पुलिस को बताया, 'पंकज मेरा अच्छा दोस्त था लेकिन वह मुझे डबल क्रॉस कर मेरी ही गर्लफ्रेंड पर चांस मार रहा था। वह मेरी गर्लफ्रेंड का पीछा करता था। उन दोनों में दोस्ती हो गई थी। यही बात मुझे पसंद नहीं थी इसलिए उसे रास्ते से हटाने का प्लान बनाया था।' सीएसपी अशोक सिंह जादौन ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। उसने वारदात कबूल कर ली।

पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग का फैसला

जिले में पद रिक्त नहीं तो दूसरे जिले में भी पंचायत सचिव पद पर अनुकंपा नियुक्ति देगी सरकार

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में पंचायत सचिवों के परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति अब दूसरे जिले में भी दी जा सकेगी। इसके लिए पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग द्वारा इस तरह की स्थिति बनने पर संबंधित जिलों के जिला पंचायत सीईओ को निर्देश जारी किए जाएंगे। राज्य सरकार ने ग्राम पंचायत सचिव सेवा भर्ती और शर्तें नियम में संशोधन के बाद यह व्यवस्था प्रभावी करने का फैसला किया है, और जल्द ही इसके आदेश सभी जिला पंचायत सीईओ को दिए जाएंगे।

पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग द्वारा नियमों में बदलाव को लेकर जारी किए नोटिफिकेशन में कहा है कि नियम 5 के बाद नियम 5 (क) स्थापित किया जा रहा है। इसमें यह प्रावधान होगा कि जिस जिला पंचायत के अंतर्गत ग्राम पंचायत सचिव सेवारत था, उस जिले की ग्राम पंचायतों में अगर पंचायत सचिव का पद रिक्त नहीं है तो उसके परिजनों को अन्य जिलों में जहां ग्राम पंचायत सचिव के पद रिक्त हैं वहां अनुकंपा नियुक्ति दी जा सकेगी।

इन जिलों में पात्रता के आधार पर ग्राम पंचायत सचिव पद पर नियुक्ति देने के लिए पंचायत राज संचालनालय द्वारा ग्राम पंचायत सचिव के रिक्त वाली जिला पंचायत को अनुकंपा नियुक्ति चाहने वाले का आवेदन भेजा जाएगा और इसके आधार पर संबंधित जिले में उसकी नियुक्ति की जाएगी।

पहले नियम न होने से हो रही थी दिक्कत

सरकार ने यह फैसला पंचायत सचिवों की सेवा के दौरान होने वाली मौत पर उनके परिजनों को दी जाने वाली अनुकंपा नियुक्ति में विलंब की स्थिति और अन्य वैधानिक परेशानियों को देखते हुए लिया है। पंचायत राज अधिनियम में संशोधन के जरिए किए जा रहे बदलावों के चलते अब यह व्यवस्था लागू होगी जिसके आदेश जल्द ही जारी होने वाले हैं।

दरअसल, कई जिलों में पंचायत सचिव के पद रिक्त न होने के कारण अनुकंपा नियुक्ति नहीं मिल पा रही थी क्योंकि पूर्व में पंचायत सचिवों का एक जिले से दूसरे जिले में स्थानांतरण का नियम ही नहीं था। अब सरकार इन्हें जिले में एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर सकती है और अनुकंपा नियुक्ति के लिए जिले में पद रिक्त न होने पर दूसरे जिले में नियुक्ति के लिए आदेश जारी कर सकती है।

गौरतलब है कि पंचायत राज और ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 69 के आधार पर यह संशोधन राज्य सरकार ने प्रस्तावित किया है। साथ ही अधिनियम की धारा 95 की उपधारा (3) में इससे संबंधित प्रस्ताव को पूर्व में सरकार 15 मार्च 2024 को लागू कर चुकी है।

संपादकीय

क्या स्पीकर चुनाव सर्वसम्मति से होगा?

लगता है कि 18वीं लोकसभा में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कदम कदम पर टकराव होने वाला है। इसकी शुरूआत तो लोकसभा में प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति से हो गई थी। भाजपा और एनडीए ने ओडिशा के वरिष्ठ सांसद भर्तृहरी मेहताब को प्रोटेम स्पीकर बनाया, जिसका इंडिया गठबंधन ने यह कहकर विरोध किया कि कांग्रेस सांसद के. सुरेश सबसे वरिष्ठ हैं। वो आठ बार के सांसद हैं। लेकिन सत्ता पक्ष ने इस दावे को यह कहकर खारिज कर दिया कि सुरेश भले ही आठ बार के सांसद हों, लेकिन उनकी सांसदी निरंतर नहीं रही है, जबकि मेहताब सतत सात बार चुनाव जीतते चले आ रहे हैं। वैसे प्रोटेम स्पीकर का पद प्रतीकात्मक ही होता है और उसका मुख्य काम नव निर्वाचित सांसदों को शपथ दिलाना और अध्यनक्ष का चुनाव होने तक सदन की कार्रवाई का संचालन करना होता है। अध्यक्ष (स्पीकर) का चुनाव होते ही प्रोटेम स्पीकर का कार्यकाल स्वतः समाप्त हो जाता है। नए स्पीकर का चुनाव 26 जून को होना है। एनडीए गठबंधन में शामिल जेडीयू व टीडीपी ने स्पष्ट कर दिया है कि बीजेपी जो प्रत्याशी तय करेगी, वह उसे मंजूर होगा। उधर विपक्ष लगातार दबाव बना रहा है कि अगर लोकसभा में डिप्टी स्पीकर का पद उसे दिया जाता है तो वो स्पीकर के लिए बीजेपी के प्रत्याशी का समर्थन करेंगे। इस पूरे मामले से मोदी सरकार किस हिकमत अमली से निपटती है, यह देखने की बात है। क्योंकि बीते 70 सालों से यह परंपरा रही है कि स्पीकर का चुनाव सर्वानुमति से ही होता है, क्योंकि अध्यक्ष सभी सांसदों के हित संरक्षक भी होते हैं। अगर मोदी सरकार ने उदारता दिखाई और डिप्टी स्पीकर पद किसी सहयोगी दल को देने की चाल नहीं चली तो स्पीकर का चुनाव बेहद आसान हो जाएगा। स्पीकर चुनाव के मामले में मोदी सरकार के रूख से स्पष्ट हो जाएगा कि वो विपक्ष को कितना महत्व देती है। अगर नहीं देगी तो सदन को चलाना किसी के लिए भी बेहद मुश्किल होगा। इस बीच लोकसभा सत्र के शुभारंभ के पूर्व मीडिया से बात करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि देश में चुनाव प्रक्रिया पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुई। आजादी के बाद दूसरी बार देश की जनता ने किसी सरकार को लगातार तीसरी बार सेवा करने का अवसर दिया है। साथ ही उन्होंने कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि आज से 50 साल पहले 25 जून को तत्कालीन पीएम श्रीमती इंदिरा गांधी ने इमर्जेंसी लगाकर लोकतंत्र पर काला धब्बा लगा दिया था, लेकिन अब ऐसा कोई नहीं कर सकेगा। पीएम ने इसके जरिए कांग्रेस के उस नरेटिव का जवाब दिया, जिसमें उसने चुनाव के दौरान पूरे जोरों से देश मं संविधान को खत्म करने की आशंका की बात कही थी। जिसका उन्हें चुनाव में लाभ भी मिला। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि देश चलाने के लिए सर्वसम्मति की जरूरत होती है। हम संविधान की पवित्रता को बनाए रखते हुए, सबको साथ लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं और फैसले लेने में तेजी लाना चाहते हैं। पीएम ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि लोगों को विपक्ष से अच्छे कदमों की उम्मीद है, लेकिन अब तक यह निराशाजनक रहा है। उम्मीद है कि वह अपनी भूमिका निभाएगा और लोकतंत्र की मर्यादा बनाए रखेगा। विपक्ष पर कटाक्ष करते हुए मोदी ने यह भी कहा कि संसद में चर्चा और परिश्रम चाहते हैं, व्यवधान नहीं। यह बात अलग है कि सरकार ने बीते 10 सालों में विपक्ष को साथ लेने की कोई ठोस पहल नहीं की।

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

धुर दक्षिण में नयी दिशा

धुर दक्षिण के दोनों राज्यों- तमिलनाडु और केरल के मतदाताओं ने कमाल कर दिया। दोनों की सोच यकसां रही और दोनों ने एनडीए को धता बता दी। जीत के मान से नतीजे भारतीय जनता पार्टी के लिये पूर्णतः निराशाजनक रहे, अलबत्ता उसके वोट प्रतिशत में इजाफा हुआ। तमिलनाडु में द्रमुकनीत गठबंधन के सामने अन्नाद्रमुक और बीजेपी समेत सभी का सूपड़ा साफ हो गया। बहुत शोरशराबे और मीडिया में विरुद्ध के बावजूद कोयंबटूर में अन्नामलै विफल रहे और चेन्नै दक्षिण में राज्यपाल पद त्याग कर चुनाव मैदान में उतरी सुश्री सौन्दरराजन को पराजय का सामना करना पड़ा। द्रमुक नेता स्तालिन के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन ने सभी 39 में सीटों पर जीत का परचम लहराया। यही नहीं, राज्य से सटे केन्द्र शासित प्रदेश पुदुच्चेरि की इकलौती सीट पर कांग्रेस के निवर्तमान सांसद वी. वैथिलिंगम ने अपना कब्जा बरकरार रखा। औपनिवेशिक काल की खुमार में डुबे इस सुरम्य सूबे में इकलौती लोकसभा सीट जीतने का बीजेपी का बलूना मंसूबा बंगाल की खाड़ी की लहरों में बह गया। पुदुच्चेरि से लगातार दूसरी बार निर्वाचित वी. वैथिलिंगम कांग्रेस के वरिष्ठ और सम्मानित नेता है। उनके जीवन-चरित के हरूफ चमकीले और चटख हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि काबिले फख्र है और पाग में कई कलगिया। उनके पूर्वजों ने फ्रेंच शासकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनके दादा रेडियर नेट्टापक्कम कम्यून के मेयर रहे और पिता ने सूबे की कमान संभाली। चेन्नै के लोयोला कालेज में पढ़कर वह गृहनगर मदुक्करै लोट आये और खेती करने लगे, लेकिन राजनीति उनको नियति थी। फलतः वह सन् 1985 में पहले पहल एमएलए और सन् 1990 में सीएम बने। उनके कार्यकाल में उद्योग और शिक्षा की खूब प्रगति हुई और इसी ने राजनीति में उनकी लंबी पारी की आधारशिला रखी। तो आठ बार एमएल्लए, एक बार सीएम, स्पीकर और नेता प्रतिपक्ष रह चुके 73 वर्षीय वैथिलिंगम पुदुच्चेरि से दोबारा एमपी चुने गये हैं। वह पुदुच्चेरि कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी हैं। इस बार उन्होंने बीजेपी केए नमस्सिवायम को कश्मकश भरे मुकाबले में हराया। एक छोटे से सूबे में कांग्रेस की यह जीत लोगों को साधारण भले ही लगे, लेकिन राजनीतिक निहितार्थों के मान से यह एक बड़ी जीत है और यह जीत द्रमुक और कांग्रेस के गठजोड़ को मजबूती प्रदान करती है। वी. वैथिलिंगम की इस जीत में द्रमुक का उल्लेखनीय योगदान रहा और तमिलनाडु के चतुर-सुजान मुख्यमंत्री स्तालिन के बेटे उदयनिधि ने पुदुच्चेरि में सघन प्रचार के साथ-साथ प्रभावशाली रोड-शो भी किया।

तमिलनाडु में अंकतालिका में सिफर पर रहने का दुख बीजेपी को अगले पांच साल सालता रहेगा। मोदी और शाह की जोड़ी को तमिलनाडु से बड़ी उम्मीद थी और उन्होंने यहां कमल खिलाने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखी थी। उन्हें अन्नामलै जैसा तुर्श नेता भी मिल गया, लेकिन द्रविड़ राजनीति के इस भूखंड में उसका सुर-ताल नहीं बदला, लिहाजा अन्नाद्रमुक से उसका गठबंधन टूट गया। बीजेपी ने इस अलगाव का खामियाजा भुगता। तमिलनाडु में सन 2026 में विधान सभा के चुनाव होंगे। देखना दिलचस्प होगा कि दो द्रविड़ पार्टियों की सैंडविच्ड - सियासत में बीजेपी कैसे सेंध लगाती है। अनुमान

यही है कि बीजेपी के लिये तमिलनाडु में अंगूर खट्टे रहेंगे, क्योंकि अन्नाद्रमुक के महासचिव ई. के. पलनीस्वामी ने दो टूक कह दिया है कि उनकी पार्टी बीजेपी से कोई समझौता नहीं करेगी और चुनाव मैदान में अकेली उतरेगी। इसमें शक नहीं कि पुदुच्चेरि और तमिलनाडु में इकतरफा और प्रभावशाली जीत से स्तालिन के नेतृत्व में द्रमुक का राजनीतिक बल और मनोबल बढ़ा है। इससे स्तालिन का प्रभामंडल और चमकीला हुआ है। गठबंधन गठन के शिल्पी होने से सारा श्रेय उनके खाते में गया है। स्तालिन की नजर अब 2026 के विधानसभा चुनाव पर है। और वह इसी चिड़िया की आंख का निशाना साध रहे हैं। यह अकारण नहीं कि अन्नाद्रमुक की पूर्व अंतरिम महासचिव वीके शशिकला और जेसीडी प्रभाकर ने अन्नाद्रमुक के विभिन्न धड़ों और गुटों के बीच एकता की अपील की है। यह अपील कितना भी रंग क्यों न लाये, अभी तो द्रमुक की पौ बारह है। कांग्रेस और वामदल उसके बगलगीर हैं। प्रसंगवश उल्लेखनीय कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री स्तालिन के रिश्तों में बीते बरसों में खटास लगातार बढ़ी है। दोनों के दारम्यां ऐसी फसीलें उग आई है, जिनका लंबे समय तक ढहना आसान नहीं है। सन 2019 में उत्तरी राज्यों में संतृप्त बिंदू तक पहुंच चुकी बीजेपी को वहाँ क्षरण का अंदाजा था। इसी के चलते उसने दक्षिणी राज्यों से भरपाई की योजना तैयार की थी। पीएम मोदी ने डेक्कन - स्टेट्स के लगातार दौरे किये और दक्षिणी राज्यों में भारी राजनीतिक पूंजी झोंकी। लेकिन इस निवेश के नतीजे मोदी की मन माफिक नहीं निकले। डेक्कन की कुल जमा 131 सीटो में से सर्वाधिक 42 सीटों पर बाजी मारी कांग्रेस ने और तेज रफ्तार की अभ्यस्त बीजेपी उससे तेरह कदम पीछे 29 पर अटक गयी। आश्चर्यजनक तौर पर उसे तेलंगाना फला। पिछली बार चार के मुकाबले इस बार वह आठ पर जीती। आंध्र में चंद्रबाबू नायडू की बदौलत उसे तीन में विजय मिली। कर्नाटक का उसका दुर्ग तो नहीं ढहा, लेकिन गत बार की 25 के मुकाबले वह 17 सीटें ही जीत सकी।

केरल की राजनीति को भी गठबंधनों की राजनीति के लिये जाना जाता है। वहां की सियासत यूडीएफ और एलडीएफ में उलझी हुई है। बीजेपी वहाँ बरसों से किसी विधि पांव टिकाने की कोशिश कर रही है। अंततः इस बार केरल के सियासी बाग से पहला कमल खिला। त्रिचूर से उसके उम्मीदवार और सिने- कलाकार नेता गोपी सुरेश विजयी हुए। सिनेमा से संसद में पहुंचे गोपी फिलवक्त अपने बयानों के कारण सुर्खियों में हैं। एक ओर तो उन्होंने पद के प्रति अनिच्छा व्यक्त की है, दूसरे पूर्व प्रधानमंत्री और कांग्रेस-नेत्री (स्व.) श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रति प्रशंसात्मक उद्गार व्यक्त किए हैं। उनका इंदिरा-अम्मा को 'मदर इंडिया' की संज्ञा देना बीजेपी-नेतृत्व को नागवार गुजर सकता है।

नतीजों पर सरसरी नजर डालें तो दिलचस्प तस्वीर उभरती है। कुल 20 में से 18 कांग्रेसनीत यूडीएफ के खाते में और एक-एक सीट क्रमशः माकपानीत एलडीएफ और बीजेपीनीत एनडीए के हक में। वाम मोर्चे के इकलौते विजयी उम्मीदवार रहे के. राधाकृष्णन। उन्होंने अलाथुर की सीट कांग्रेस से छीनी। इसे एकबारगी छोड़ दे तो वाम-शिविर की एमी राजा के अलावा केके शैलजा, टीएम थामस, इसाक, ई. करीम, ए. विजयराघवन, एमबी जयराजन और पी. रवीन्द्रन चुनाव हार गये। कांग्रेस की इकतरफा लहर में भगवा-शिविर के मल्लों के भी पाँव उखड़े। राजधानी तिरुवनंतपुरम में बीजेपी के केंद्रीय मंत्री प्रत्याशी राजीव चंद्रशेखर ने कांग्रेस के बहुचर्चित प्रत्याशी और निवर्तमान सांसद शशि थरूर पर बढ़त बना ली थी, लेकिन अंततः थरूर 16077 वोटों से विजयी रहे। शिविर की बात करें तो वी. मुरलीधरन, के. सुरेन्द्रन, एमटी रमेश, शोभा सुरेन्द्रन और अनिल एंटोनी को पराजय का सामना करना पड़ा। बीजेपी की सहयोगी भारत धर्म जन सेना के तुषार वेलापल्ली चुनावी दौड़ में कोट्टायम में तीसरे स्थान पर रहे।

केरल में कांग्रेस का प्रदर्शन वाकई शानदार रहा। वायनाड से राहुल गांधी का जीतना तय था, लेकिन केरल में सर्वाधिक तीन लाख 64 हजार से अधिक वोटों की जीत से उनका सियासी कद ऊंचा हुआ। कांग्रेस का विजय- रथ पूरे प्रदेश में घूमा। कांग्रेस ने अपने प्रतिद्वद्वियों को बखूबी छकाते हुये कासरगोद, कन्नूर, वडकरा, कोझीकोड, वायनाड, तिरुवनंतपुरम, पलक्कड़, चलकुड़ी, एर्नाकुलम, एटिंगल, इडुक्की, मावेलिवकरा, पथनमथिट्टा और अलप्पुझा में जीत का परचम लहराया। उसके सहयोगी दलो में आईयूएमएल के ईटी मोहम्मद बशीर और अब्दुस्समद समदानी ने क्रमशः मलप्पुरम और पोन्नानी की सीटें जीती। ऐसे ही आरएसपी के प्रेमचंद्रन कोल्लम से जीते। इस दास्ताने-सियासत का क्षेपक यह है कि राहुल के इस्तीफे के बाद अब प्रियंका गांधी वायनाड से चुनाव लड़ेंगी। दूसरी बात यह कि शशि थरूर का यह अंतिम चुनाव था। अगली बार त्रिवेंद्रम में कोई नया प्रत्याशी नमूदार होगा। इस रंग बदलती राजनीति में दक्षिण की दिशा यकीनन काबिलेगौर है।

महाराष्ट्र डायरी

चेतनादित्य आलोक

वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

अलगाववाद एवं आतंकवाद का समर्थन कनाडा के लिए आत्मघाती होगा

इसलिए समय रहते सचेत हो जाएं टूडो

कनाडा सरकार का दोहरा चेहरा दुनिया के सामने एक बार फिर बेनकाब हो गया, जब 18 जून को वैंकूवर स्थित भारतीय दूतावास के सामने खालिस्तान समर्थक कट्टरपंथियों ने कथित रूप से एक झांकी निकाली, जिसमें सड़कों पर पीएम मोदी के खिलाफ मुकदमा चलाकर प्रतीकात्मक रूप से उन्हें अपराधी के रूप में पेश किया गया। इतना ही नहीं, मॉक ट्रायल शुरू होने से पहले जेल में बंद अपराधियों की वर्दी पहने मोदी के पुतले को एक अस्थायी पिंजरे में रखकर सड़क पर घुमाया गया। फिर उनके पुतले को सजा सुनाई गई और अंत में फांसी दे दी गई। इस पूरी घटना के दो-तीन दिन बाद भी कनाडा सरकार ने प्रधानमंत्री मोदी और भारत के विरूद्ध इस घिनौनी हरकत को अंजाम देने वाले खालिस्तानी कट्टरपंथियों के विरूद्ध कोई कार्रवाई नहीं की है। यकीन मानिए, वहां की सरकार ऐसा कुछ करने वाली भी नहीं है, क्योंकि यदि कुछ करना ही होता तो भला वह कनाडा में एक साल पहले मारे गए खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर को वहां की संसद में श्रद्धांजलि देने और उसके सम्मान में दो मिनट का मौन रखने की पहल ही क्यों करती। बता दें कि निज्जर वही आतंकी है, जिस पर भारत में हत्या का आरोप था और जो भारत में 'मोस्ट वॉंटेड' आतंकियों की सूची में शामिल था। यह वही आतंकी है, जिसकी हत्या के मामले मेंवहां के प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो ने खुलेआम बिना किसी ठोस सबूत के भारत का नाम घसीटा था। उसके बाद से दोनों देशों के बीच जो तनावपूर्ण माहौलबना था, वह कमोबेश आज तक कायम है।

दुर्भाग्य से उस आतंकी की मौत पर कनाडा में आंसू बहाने वालों की जमात दिनोंदिन बड़ी और बेहद उग्र होती जा रही है। हालांकि जी-7 समूह के शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ बैठक में भाग लेते हुए जस्टिन टूडो नेदोनों देशों के बीच संबंधों में आई खटास के बावजूद कुछ बेहद जरूरी मुद्दों पर भारत के साथ मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता जताई थी। टूडो ने इटली में तीन दिवसीय जी-7 शिखर सम्मेलन के अंतिम दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था- 'मैं इस जरूरी और संवेदनशील मुद्दे के डिटेल में नहीं जाना चाहूंगा, जिस पर हमें आगे काम करने की आवश्यकता है, लेकिन यह आने वाले समय में कुछ बेहद जरूरी मुद्दों से निपटने के लिए एक साथ काम करने की प्रतिबद्धता है।' इससे पहले 14 जून को पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर टूडो के साथ अपनी एक तस्वीर शेयर की थी, जिसमें दोनों नेता हाथ मिलाते हुए देखे गए थे। गौरतलब है कि खालिस्तानी चरमपंथ को लेकर राजनयिक तनाव बढ़ने के बाद दोनों नेताओं के बीच होने वाली यह पहली मुलाकात थी।उससे पहले दोनों नेता पिछले साल सितंबर में दिल्ली में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान मिले थे। देखा जाए तो दोनों राष्ट्र प्रमुखों ने जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान आपसी संबंधों को बेहतर करने के लिए आगे बढ़ने और तीखे संवादों से बचने के संकेत दिए थे, जिससे दोनों देशों के बीच फिर से तनावपूर्ण माहौल न बनने पाए। जाहिर है कि दोनों देशों के बीच रिश्तों की बर्फ पिघलने की आस लगाए लोगों के लिए यह अच्छी खबर थी।

दोनों राष्ट्र प्रमुखों की देह-भाषा भी सकारात्मक प्रतीत होती थी। इतना ही नहीं, जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान कनाडाई प्रवक्ता ने भी भारत और कनाडा के बीच के तनावपूर्ण संबंधों के संदर्भ में मीडिया द्वारा पूछे गए तीखे सवालों को टालते हुए कहा था कि बेशक इस समय दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।इसलिए वे इस समय कोई और बयान नहीं देंगे। इस प्रकार जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान ऐसा महसूस होने लगा था कि शायद एक बार फिर दोनों देशों के बीच शीघ्र ही अब सबकुछ ठीक होने वाला है, लेकिन क्या कारण है कि स्वदेश लौटते ही टूडो ने भारत के विरुद्ध जहर उगलना शुरू कर दिया। एक तरफ तो वेभारत के साथ रिश्ते बेहतर करने के संकेत देते हैं और दूसरी ओर खालिस्तानी आतंकियों को सम्मानित करके और उनके पक्ष में बयान देकर न केवल भारत के हितों की अनदेखी करते हुए, बल्कि खालिस्तानी आतंकियों को संरक्षण और बढ़ावा देकर भारत के विरूद्ध साजिश करते हुए भी दिखाई देते हैं। इसलिए भारत सरकार द्वारा कनाडा सरकार से कड़ा प्रतिरोध दर्ज कराना उचित ही है। बता दें कि भारत ने कनाडाई उच्चायोग को एक राजनयिक नोट जारी करते हुए अलगाववादी तत्वों की ताजा हरकतों पर अपनी गंभीर आपश्रि जताई है। भारतीय दूतावास ने भी कनाडा सरकार से साफ-साफ कह दिया है कि वह खालिस्तानी तत्वों और भारत सरकार के विरोधियों को बढ़ावा न दे।

देखा जाए तो कनाडा में जिस प्रकार से भारत विरोध को हवा देकर भड़काने की लगातार साजिशें हो रही है, उसमें कहीं-न-कहीं वहां की मुख्यधारा की राजनीति शामिल है। ऐसी घटनाएं किसी भी शांतिप्रिय एवं लोकतांत्रिक समाज में जायज नहीं ठहराई जा सकतीं। किसी भी सभ्य समाज में हिंसा की वकालत अथवा उसका महिमामंडन नहीं किया जाना चाहिए।चाहे कुछ भी हो, लोकतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर कनाडा को अलगाववाद एवं आतंकवाद का समर्थन करने की स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। कनाडाई प्रधानमंत्री को अच्छी तरह से मालूम है कि खालिस्तानियों का एक समूह वर्षों से कनाडा के उदार स्वतंत्रता कानूनों का दुरुपयोग कर रहा है और टूडो की सरकार वोट बैंक की राजनीति के कारण उनके विरूद्ध कोई कदम नहीं उठा रही। हालांकि खालिस्तान समर्थक कनाडाई सांसदों के सहयोग से सरकार चला रहे प्रधानमंत्री टूडो शुरू से ही भारत विरोधी या कहा जाए कि खालिस्तान समर्थक बयान देते रहे हैं। कनाडा में भारत विरोधी गतिविधियों को साथ और सहारा देना शायद उनकी रणनीति का हिस्सा रहा है। बता दें कि टूडो 2015 में सत्ता संभालने के बाद से लगातार यह कहते आए हैं कि वे कनाडा में विदेशी दखल को कम करने के लिए काम कर रहे हैं और उनके ऐसा कहने का विशेष मतलब भारत से होता है।गौरतलब है कि भारत के साथ बेहतर संबंध बनाए रखने के लिए वे अपने ही देश की पिछली कंजरवेटिव सरकार पर हमलावर रहे हैं।

अब एक बार फिर उन्होंने इस मामले में पिछली सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा है कि उन्होंने देश के अल्पसंख्यकों की अनदेखी कर भारत के साथ बेहतर रिश्ते बनाए रखे। दरअसल, कनाडा की पिछली कंजरवेटिव सरकार भारत के साथ अपने मधुर संबंधों के लिए जानी जाती थी। कानून के शासन का सम्मान करने वाले लोकतांत्रिक देशके प्रधानमंत्री होने के नाते टूडो को भी इसकी अहमियत समझनी ही होगी। कनाडा की धरती पर खाद-पानी पाकर फल-फूल रहे खालिस्तान समर्थक तत्वों को, जो लगातार वर्षों से भारत विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं, कानूनी दायरे में लाकर उन पर उचित कार्रवाई करनी ही होगी। कनाडा को 23 जून 1985 का वह दिन नहीं भूलना चाहिए, जब मांट्रियाल से लंदन जा रहे एयर इंडिया के हवाई जहाज को जमीन से 31 हजार फीट की ऊंचाई पर कनाडाई खालिस्तान समर्थक आतंकियों ने बम विस्फोट से उड़ा दिया था।उस जहाज में सवार 268 कनाडाई, 27 ब्रिटिश एवं 24 भारतीय निर्दोष नागरिक मारे गए थे। वह घटना दुनिया में विमानन आतंकवाद के भीषणतम दुष्कृत्यों में से एक मानी जाती है। उस घटना की बरसी पर मारे गए लोगों के दुखी परिजन उन्हें याद करना चाहते हैं, लेकिन विडंबना तो देखिए कि आतंकी निज्जर को तो संसद में सम्मान सहित श्रद्धांजलि दे दी गई, जबकि आतंकी हमले के शिकार हुए निर्दोष लोगों को बाहर भी कहीं श्रद्धांजलि देने पर आपत्ति प्रकट की जा रही है, क्योंकि खालिस्तानी अलगाववादियों को यह चुभ रहा है।

बहरहाल, अपनी धरती पर स्याह ताकतों को बढ़ावा देने से पहले कनाडा को 1980 के दशक का वह दौर स्मरण करना चाहिए, जब कनाडा आतंकवाद की आग में झुलस रहा था। इसलिए चिंता सिर्फ भारत को लेकर ही नहीं है, बल्कि कनाडा के भविष्य को लेकर भी है, क्योंकि यदि टूडो सरकार ने अपना रवैया नहीं बदला तो दोनों देशों के बीच संबंधों में गिरावट तो आएगी ही, साथ ही, ये अलगाववादी और आतंकवादी तत्व एक दिन पुनः कनाडा के लिए ही आत्मघाती साबित होंगे, लेकिन तब शायद यह सब झेलने के लिए जस्टिन टूडो नहीं होंगे, क्योंकि तब तक कनाडा में दूसरी सरकार आ चुकी होगी, जिसे विरासत में अलगाववादएवं आतंकवाद का उपहार मिल चुका होगा। इसी प्रकार, भारत की ओर से पाकिस्तान को भी सदा से ही चेताया गया, लेकिन भारत विरोध में अंधी हो चुकी पाकिस्तान की तमाम सरकारों ने भी कभी नहीं सुना। पाकिस्तान आतंकवादियों के सहारे छद्म युद्ध करके भारत को लहूलुहान करता रहा और आज उसका वह निर्णय उसी के लिए आत्मघाती साबित होने लगा है।

(इतिश्री)

हवा-पानी में बदलाव भी नई ऊर्जा देता है

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

रोजमर्रा की जिंदगी की एकरसता से कभी-कभी मन भी उचट जाता है। जिसके चलते थोड़ा हवा-पानी बदलने का मन करता है। और हम मन बनाकर कहीं दूर तक का सफर करने का निश्चय कर लेते हैं। इस दौरान चीलगाड़ी में बैठकर उड़ने के रोमांच से लेकर ऊंट और घोड़े की सवारी तक का आनंद भी लिया जाता है। भांति-भांति के व्यंजनों का लुफ्त उठाते हुए अलग-अलग खानपान की संस्कृति से रूबरू हुआ जाता है। हमारी दिनचर्या चाहे अस्त व्यस्त हो जाती हो, लेकिन हम हर एक काम को एकदम एकाग्रचित अवस्था में आकर करने लगते हैं। यानी कि कामकाजी तनाव के साथ-साथ व्यर्थ के विचार भी काफी पीछे छूट जाते है।

विशेष रूप से रहन-सहन खान-पान और भाषा शैली की दृष्टि से भिन्न-भिन्न प्रांतों में जाने का अपना एक अलग ही अनुभव हुआ करता है। अनेकता में एकता की बानगी का प्रत्यक्ष अनुभव ऐसी ही किसी यात्रा से गुजरने पर हुआ करता है। यात्रा के दौरान सहयात्रियों से औपचारिक बातचीत भी बहुत कुछ सीखने और समझने का अवसर प्रदान करती है। कभी-कभी तो इसे बातचीत में कुछ इस कदर घुलने-मिलने में आ जाता है कि नाम पते की जानकारी तक साझा कर ली जाती है। नई जगह जाने पर अलग-अलग व्यापार और पेशे को अपनाने वाले लोग अपनी-अपनी व्यापारिक एवं पेशेवर दृष्टि से संज्ञान लेना नहीं भूलते।

गहराई से देखा जाए तो हर प्रकार की छोटी बड़ी यात्रा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बहुत कुछ सिखाती भी है। आमतौर पर ऐसी यात्रा एकल नहीं अपितु सामूहिक हुआ करती है। हमारे अपने नजदीकी नाते-रिश्तेदार और मित्र मंडली के साथियों के साथ ही ऐसी सामूहिक यात्रा के योग बना करते हैं। इस दौरान परिचितों से और भी अधिक अच्छी तरह से परिचित होने का अवसर भी मिलता है। परस्पर संबंधों में प्रगाढ़ता भी आती है और निखार भी। ऐसी यात्रा अनगिनत परिवारों को रोजगार का साधन भी उपलब्ध कराती है। यात्रा के दौरान स्वाभाविक रूप से खट्टे मीठे अनुभव तो खैर मिलते ही रहते हैं।

आजकल के दौर में विशेषकर नई पीढ़ी के लिए तीर्थाटन और पर्यटन में कोई ज्यादा अंतर नहीं रह गया है। वैसे इसमें भी एक सुकून यह है कि नई पीढ़ी के लोग अपनी यात्रा के दौरान जहां कहीं भी जाते हैं, वहां के प्रसिद्ध धर्म स्थल पर जाना कदापि नहीं भूला करते। इससे सिद्ध होता है कि हमारे यहां विभिन्न परिवारों में धर्म संस्कृति की जड़े इतनी गहरी है कि आदमी अपनी सांस्कृतिक परंपरा का निर्वहन करते हुए प्रसिद्ध धर्म स्थलों की ओर एक प्रकार से खींचा चला आता है। वहां जाकर मिलने वाला आत्मीय सुकून उसके संस्कारों में रच-बस कर अंतर्मन में निर्मलता के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

वैसे यह अलग बात है कि छोटी-बड़ी ऐसी तमाम यात्राओं के अंतिम दौर में हमें अपने घर की याद आने लगती है। रोजमर्रा के कामकाज को लेकर कुछ हद तक हम बेचैन भी होते हैं। वैसे घूमने-फिरने को तो हम चाहे जहां चले जाएं, लेकिन फिर भी अपना घर तो अपना घर ही होता है। जहां मन का सुकून और जीवन का जुनून झलका करता है। लेकिन एक बात तो तय है कि हर एक यात्रा मन को इतनी तरोताजगी से भर दिया करती है कि हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी की ओर लौट कर और अधिक ऊर्जा एवं चेतना से सराबोर हो जाते हैं। यानी कि जीवन रण संग्राम के एक कुशल योद्धा के रूप में मानसिक रूप से परिपक्वता का अनुभव करने लगते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दृष्टिकोण

रामविलास जांगिड़

राजधानी में जल संकट के पांच सीन

राजधानी में जल संकट पूरी दुनिया का मनोरंजन है। न्यूज़ चैनल वेब सीरीज चलाने लग गए हैं। आईए देखें कुछ सीन।

सीन 1- नहाना स्विमिंग पूल में और लेना मीटिंग पुलिस की।

सभी पुलिस अधिकारी अपने निजी स्विमिंग पूल में नहा कर आए हैं। जल संकट संबंधी चुटकुले सुना रहे हैं। बैठकें कॉमेडी फिल्म से कम नहीं है। हाथों-हाथ जल चोर पकड़ रहे हैं। समोसे, बर्फी और पानी की बोतलों के बीच, पानी की कमी पर इतनी लंबी चर्चा हो रही है कि बातों से पानी निकलकर बाढ़ में बदल गया है। मीटिंग के बाद सभी पुलिस कर्मी फिर से स्विमिंग पूलों में नहाने चले गए हैं।

सीन 2- होना दर्ज शिकायत का और मिलना पानी कंप्यूटर से।

शिकायत दर्ज कराने के लिए सब लाइनों में लगे हैं। जब बारी आती है, तो लगता है जैसे किसी रियलिटी शो का ग्रैंड फिनाले जीत गए हों- 'कौन बनेगा पानीपति!' ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराना किसी एडवेंचर से कम नहीं है। वेबसाइट पर जाते ही ऐसा लगता है जैसे जंगलों में रास्ता ढूंढ़ रहे हों। जब कभी शिकायत दर्ज हो जाती है, तो कंप्यूटर के मॉनिटर से ही पानी का बंबा फूटने लगता है।

सीन 3- करना रात्रि जागरण और चलना पानी मोटर का।

राजधानी में पानी की मोटर चलाना किसी चक्रव्यूह से कम नहीं है। इसके लिए रात-भर पानी के भजन करने पड़ते हैं। पानी प्रेशर ऐसा कि जैसे मरा मुर्दा बूंद-बूंद चुटकुले सुना रहा हो। रात की मेहनत के बाद भी बाल्टी में इतना पानी आता है कि घर के सभी सदस्यों के छींटे लगा सकते हैं। घर के काम तो जैसे किसी और ग्रह की बात हो गई है। सुबह का नाश्ता बनाते समय आंखें बंद होती हैं और चाय में चीनी की जगह नमक डालने की प्रथा हो गई है। लोग रात में टॉर्च लेकर ऐसे निकलते हैं जैसे किसी राजा का गड़ा धन ढूंढ़ रहे हैं।

सीन 4.आना जल बोर्ड टैंकर का और मचना भभ्भड़।

जल बोर्ड टैंकर इंतजार में पूरा मोहल्ला रात से ही लाइनों में भभ्भड़

मचा रहा है। प्रेमी-प्रेमिकाएं रोज प्रार्थना करते हैं कि ऐसी लाइनें उम्र भर लगी रहे। इन लाइनों में खड़े-खड़े लोगों के रिश्ते होते हैं। बच्चे पैदा होते हैं और तीये की बैठक भी यहीं हो जाती है। महिलाओं के लिए ये लाइनें सोशल क्लब से ज्यादा है। यहीं चुटकुलों का ऐसा दौर चलता है कि पानी भरने के बाद भी वे वहीं खड़ी रहती हैं। आधा दिन पानी का इंतजाम करने और बाकी आधा दिन उस पर चर्चा करने में ही निकलता है।

सीन 5- बकझक राजनीतिक दलों की और मचना पानी बवाल।

'क' पार्टी का बयान- ये सब कारस्तानी 'ख' पार्टी और 'ग' पार्टी के नेताओं की है। 'ख' पार्टी की प्रेस वार्ता- ये सब 'क' पार्टी के नेताओं की चाल है और 'ग' पार्टी के नेता तो बड़े बदमाश हैं। ये सब इनकी मिली भगत व साजिश है। 'ग' पार्टी की आवाज- ये सब कारस्तानी 'ख'पार्टी और 'क' पार्टी के नेताओं की ओर से की गई है। हर एक नेता पानी की कमी की जिम्मेदारी एक दूसरे पर फेंक रहा है। राजधानी में/पे/पर/का जल संकट दूर हो रहा है।

नया दौर

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

स्वच्छ इंदौर में अब प्रदूषण बड़ी चुनौती

इंदौर मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा व्यापारिक, व्यावसायिक शहर। मिनी बॉम्बे बहुत पहले से कहा जाता रहा। अब सबसे स्वच्छतम शहर के रूप में पहचान। बड़े दिल वालों और मुक्त हस्त से दान देने, मदद करने वालों का शहर। मालवी संस्कृति और तहज़ीब को संरक्षित कर सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण शहर। जहां छोटे से लेकर बड़े त्योहार बड़े जोरशोर से मनाने का रिवाज आज भी कायम है। राजनीतिक, सामाजिक शक्ति प्रदर्शन का केन्द्र। जहां का मीडिया आज भी उतनी ही दमदार और प्रभावी भूमिका में है। सबसे अधिक गतिशील और सक्रिय इंदौर प्रेस क्लब के साथ अब स्टेट प्रेस क्लब भी। जहां हाल ही में पत्रकारिता का महाकुंभ संपन्न हुआ।

इन सारी विशेषताओं के बावजूद मेरी निगाहें कोई पैंतीस बरस पहले के इंदौर को खोजती रहती है। लंबे अरसे बाद इंदौर में पखवाड़े भर से ज्यादा समय रुकने का अवसर मिला। यूं एक दो दिन के लिये यहां आने और काम निपटाकर जाने के मौके साल में एक दो मर्तबा आते रहे लेकिन बदलते इंदौर के स्पंदन, आबोहवा, जनजीवन को नज़दीक से देखने, परखने और महसूस करने का संयोग इस बार मिल सका। इंदौर आने वाला हरेक शख्स काम धंधे की वज़ह से, शॉपिंग करने या स्वास्थ्य खराब होने पर विश्वसनीय जांच, उपचार या युवा वर्ग पढ़ाई, कोचिंग या रोज़गार के सिलसिले में आता रहा है। इंदौर कोई पर्यटन स्थल तो है नहीं लेकिन रंगपंचमी पर निकलने वाली गैर और गणेश विसर्जन की झांकियों के चलते देश-विदेश में जाना जाता रहा है। अब सबसे स्वच्छतम शहर का तमगा मिलने से शहर का जनमानस गदगद है।

आज का इंदौर एयर कनेक्टिविटी से देश के प्रमुख शहरों और पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों से जुड़ा है। इन्टरनेशनल फ्लाइट्स की शुरुआत भी हो चुकी है। अच्छी सड़कों के साथ रिंग रोड, बायपास रोड समेत अनेक फ्लाईओवर बन जाने और मेट्रो ट्रेन के लिये काम चलने से भविष्य के लिये रणनीति की तैयारी नजर आती है। हालांकि मेट्रो के रुट को लेकर खासकर शहर के

अंदरूनी भाग को लेकर पुनः मंथन चल रहा है। इसके बावजूद शहर की यातायात व्यवस्था अनियंत्रित, बेतरतीब, जबरदस्त भीड़भाड़ और प्रदूषण को बढ़ाने वाली दिखाई देती है। प्रदूषण इस कदर बढ़ता जा रहा है कि यदि ऐसा ही रहा तो किसी समय शुद्ध हवा में सांस लेना दूभर हो जायेगा। वाहनों के शोर, धुंए, बेवजह बजाये जाने वाले प्रेशर हॉर्न, कारों बसों के एसी से उत्पन्न हीट अच्छे खासे इंसान को बीमार करने के लिये पर्याप्त है। शहर में बसों, भारी वाहन और ट्रकों की आवा-जाही अत्यधिक है । भले ही उनके लिये अलग से रुट बने हों। अब लंबी दूरी की बसों के अवैध बस स्टेंडों को शहर

से बाहर करने की तैयारी है। दूसरी ओर रात्रि में भी दुकानों, प्रतिष्ठानों को खुला रखने की बात की जा रही है।

पूर्व सरकार के बिना सोचे समझे किये गये फैसलों के दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं। आबकारी नीति में बदलाव से इंदौर के अनेक चौराहों, मुख्य मार्गों, शिक्षण संस्थाओं के नजदीक शराब की कंपोजिट दुकानें सजी नजर आती है। यहां शोरगुल,लड़ाई झगड़े समेत अन्य अपराध घटित होते हैं। सिर्फ इंदौर ही नहीं राजधानी भोपाल सहित प्रदेश के दूसरे अन्य शहरों, कस्बों, गांवों और हाईवे पर भी कमोबेश यही हालात दिखाई पड़ते हैं। सरकारों को अपनी राजस्व का जरिया बढ़ाना है तो खूब पीयें और अपनी गाढ़ी कमाई को परिवार की जरुरतों पर खर्चने की बजाय ठेके पर आकर उड़ायें, यही सब चल रहा है।

भोपाल में हमारे छोटे से घर के नज़दीक शाहपुरा पहाड़ी के एक हिस्से को मोरवन के नाम से जाना जाता है। यहाँ से राष्ट्रीय पक्षी मोर की मधुर आवाज और बारिश के वक्त मोरों का नृत्य देखा जा सकता है। आज का इंदौर शोरवन लगता है जहां चहुंओर शोर ही शोर है। चाहे वाहनों का शोर हो या बाजारों में व्यावसायिक गतिविधियों के चलते उत्पन्न शोर शराबा। ऊपर आकाश में उड़ान भरते या लेंड करते एरोप्लेन का शोर।बरसों पहले अभिनेता मनोज कुमार की फिल्म शोर के दृश्य बरबस याद आ जाते हैं जिनमें बढ़ते शोरगुल का मानव स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि पक्षियों, जीव जंतुओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की ओर इंगित किया गया था।

इंदौर का यह कैसा नया दौर है कि शहर के चारों ओर बसे ग्रामीण इलाके विकास की इस दौड़ में जैसे कहीं खो गये हो। आज देवास की ओर से इंदौर में प्रवेश करें या राऊ, महू, पीथमपुर, धार, उज्जैन या खंडवा, खेतों हरियाली की जगह ऊंची ऊंची इमारतों, मल्टीज ने ले ली है। यह सिलसिला लगातार चल रहा है। शहर के बीच से गुजरने वाली एबी रोड (पुरानी) पर विजयनगर रेडिसन, पलासिया, एलआईजी, गीता भवन, जीपीओ छावनी, नौलखा भंवरकुआ चौराहा हो या फिर अंदर के रीगल, मधुमिलन टॉकीज या कोठारी मार्केट, राजवाड़ा के रास्ते के चौराहे हों ट्राफिक का दबाव बढ़ता जा रहा है। पलासिया समेत कुछ अति व्यस्त चौराहों को क्रास करने में सिग्नल से दो तीन बार इंतजार करने पर निकल सकते हैं। शहर की प्रमुख एमजी रोड, आरएनटी मार्ग, जवाहर मार्ग, जेल रोड हो या राजवाड़ा के नज़दीक से सराफा, खजूरी या क्लाथ मार्केट, मारोठिया, कोठारी मार्केट कहीं पर भी भीड़भाड़ , शोरगुल और प्रदूषण में कमी परिलक्षित नहीं होती दिखती। उधर खजराना गणेश मंदिर, बंगाली चौराहा, रिंग रोड या बायपास रोड स्थित चौराहे तथा छप्पन दुकानों पर आने जाने के रास्तों का स्वरूप ही बदल गया है।

याद करें कि तकरीबन पैंतीस साल पहले इंदौर कैसा था। वर्ष 90 के दशक में अपनी पद स्थापना के दौरान अपन जीप को ड्राइव कर बड़े आराम से राजवाड़ा स्थित अपने ऑफिस और कलेक्टर कार्यालय तक चले जाते थे। आज के ट्रैफिक को देखते हुए यह सम्भव नहीं लगता।शहर के बीच से एबी रोड गुजरता था तब भी यातायात सुचारू ढंग से चलता रहता था। एमजी रोड समेत अन्य सड़कों पर ट्रेफिक रहता लेकिन प्रदूषण इतना नहीं था। रोड क्रास करने में इतना समय नहीं लगता था। पूर्व मुख्य सचिव और धाकड़ आईएएस विजय सिंह इंदौर के कमिश्नर और पूर्व मुख्य सचिव एस.आर. मोहंती कलेक्टर थे जो शहर की गतिविधियों, घटनाओं, जरूरतों पर पैनी नजर रखा करते थे। आज के प्रशासनिक अधिकारी उनके कामकाज से सबक लेकर सीख सकते हैं। परंतु आज का माहौल अपनी लाइन बड़ी करने और पिछले के काम को मिटाना है। यहाँ तत्कालीन एसपी अनिल धस्माना की वर्किंग भी याद आती है। धस्माना बाद में भारत सरकार में रॉ जैसी महत्वपूर्ण संस्था के प्रमुख रहे। विजय सिंह भारत सरकार में प्रमुख पदों पर रहे।

दरअसल इंदौर में कलेक्टर के पद पर पद स्थापना को बड़ा प्रतिष्ठा पूर्ण माना जाता रहा है। इस पद के बाद या पहले आईएएस या तो जनसंपर्क विभाग के आयुक्त या संचालक बने या फिर सीएम हाउस पहुँचे। एस. आर.मोहंती,ओ.पी. रावत, गोपाल रेड्डी, भागीरथ प्रसाद समेत अन्य अधिकारी शामिल हैं। मुख्य मंत्री पद पर जो भी रहे हों उनका फोकस इंदौर अवश्य रहता आया है।अब प्रदेश का नेतृत्व मालवा क्षेत्र के हाथों में है तो उम्मीदें, अपेक्षाएं भी ज्यादा होना स्वाभाविक है। अभी तक (अपवाद को छोड़कर) सीएम का चेहरा मॉस अपील वाला रहा है।अभी के नेतृत्व को कई कसौटियों पर खरे उतरना है। साथ ही झाबुआ, बुरहानपुर से लेकर सुदूर सीधी, मंडला, बालाघाट से भिंड मुरैना और मंदसौर नीमच तक समान रूप से लोगों तक विकास योजनाओं का लाभ पहुँचाने का चुनौतीपूर्ण दायित्व भी है ।

पुस्तक समीक्षा

दीपक गिरकर

समीक्षक

जीवन के रंगों से सजी गीत रंगोली

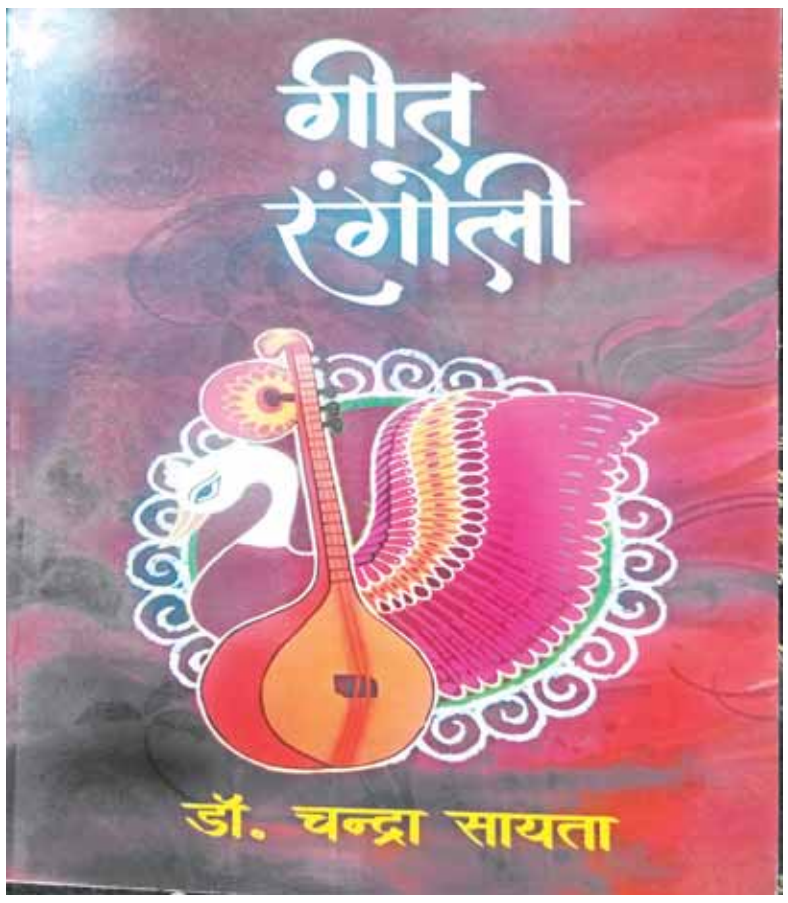

'गीत रंगोली' वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. चंद्रा सायता का पहला गीत संग्रह है। इसके पूर्व इनके दो काव्य संग्रह, दो लघुकथा संग्रह, एक सिंधी भाषा में काव्य संग्रह, एक लघुकथा संग्रह का सिंधी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। साहित्य में चंद्रा जी की सक्रियता और प्रभाव व्यापक हैं। डॉ. चंद्रा सायता एक संवेदनशील साहित्यकार हैं। इनकी रचनाएं निरंतर देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। चंद्रा जी को अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। इससंग्रहमेंप्रकृति, प्रेम, राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत, विभिन्न रिश्तों, करूणा और ममता को सहेजने के और जीवन की विभिन्न स्थितियों को अभिव्यक्त करते गीत हैं। इस संग्रह की हर रचना पाठकों और साहित्यकारों को प्रभावित करती है। इस संकलन में 75 छोटे-बड़े गीत संकलित हैं।

लेखिका के गीत सीधे-सच्चे हैं, इनमें कृत्रिमता नहीं है। इस संग्रह में उनके हृदय-स्पर्शी गीत संग्रहित हैं। इस गीत संग्रह की भूमिका बहुत ही सारगर्भित रूप से वरिष्ठ साहित्यकार, कवि आदित्य हरि गुप्ता ने लिखी है।कवि आदित्य हरि गुप्ता लिखते है- अपनी सहज-सरल भावनाओं को सृजन के माध्यम से और अनुभवों के समंदर में गोते लगा-लगाकर मन-मंथन से मोती चुनकर खोज लाने की विधा को ही कविता कहते है और यह ईश्वर का वरदान चंद्रा जी को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों एवं पुण्य कर्मों से प्राप्त है ऐसा मैं समझ पाया हूँ।

गीतों का संसार आजकल यांत्रिकता में कहीं खो सा गया लगता है और इस प्रकार के गीत-संग्रह जीवन की आपा-धापी, भौतिकता की चकाचौंध से निकल कर मानव को प्रकृति के पास ला खड़ा करते हैं।

नाचे मन की मयूरी झूम-झूम के।/ पर्वत मुस्काए बदरी को चूम-चूम के। /

डर कर भाग रहे मृग-शावक ऐसे / दृष्टि भ्रमित कर रहे नन्हें धावक जैसे। / बरस जाऊँ नीर भरी बदरी बनकर / मख़मलीवसुंधरा पर मोती बनकर।

वे 'आनंद अतिरेक' रचना में एक ऐसा दृश्य रचती हैं जिसमें पाठक कल्पनाओं के लोक में खो जाता है।

रचना 'प्रेम रंग' कथात्मकता के साथ जिस तरह से अपने पूरे यथार्थ को चित्रित करती है उससे काव्य की नई अनुभूति होती है। यही कविता का सौंदर्य है।

रंग तम डालो नि डालो / मन के राख जो नि कालो / प्रेम रंग गैरो गुलाबी / हर पिचकारी माँ डालो।

इस संग्रह की रचनाएं 'माँ' तथा 'मैं और माजी' कविता न होकर माँ का सम्पूर्ण शब्दचित्र है।

जींद का जाट कुर्बान हो गया / ज़िन्दगी वतन के नाम की कहानी / हुआ बगावती आचरण जहाँ जब / कैप्टन ने पाई शिक्षा वहीं अपनी।

जाट पवन की शहादत को भूल / जाटों ने लगाई बोली अपनी-अपनी। / पर अंत तक अड़ा रहा / देश के नाम कर गया जां अपनी।

यह रचना एक शहीद की देश के प्रति निष्ठा और समर्पण की दास्ताँ है।

'नदिया की जुबानी', 'फाग खेलें अखियाँ', 'बसंत अगमन' आदि कवितायें प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित हैं जो प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करती हैं।

डॉ. चंद्रा सायता की लेखनी का कमाल है कि उनकी रचनाओं में सहजता, जीवन का स्पंदन, आत्मिक संवेदनशीलता प्रतिबिंबित होती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कविता चंद्रा जी की आत्मा में रची-बसी हैं। लेखिका अपनी रचनाओं में आशा और विश्वास का भरपूर संचार करती है। इस संग्रह की रचनाएं पाठकों को मानवीय संवेदनाओं के विविध रंगों से रूबरू करवाती हैं।लेखिका की रचनाओं में जीवन के तमाम रंग छलछलाते नज़र आते हैं।आशा है डॉ. चंद्रा सायता के इस जीवन के रंगों से सजी गीत रंगोली का साहित्य जगत में भरपूर स्वागत होगा।

पुस्तक - गीत रंगोली
लेखिका - डॉ. चंद्रा सायता
प्रकाशक - मधुशाला प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, भरतपुर - 321001
आईएसबीएननंबर - 978-93-90874-58-3
मूल्य - 180 रूपए

मुद्दा

श्रुति

कुमाऊनी बोली और भाषा से कैसे जुड़ेगी नई पीढ़ी?

भाषा के रूप में कुमाऊनी साहित्य या अन्य दस्तावेज़ के प्रमाण बहुत कम मिलते हैं. जिससे यह केवल एक बोली के रूप में सीमित होकर रह गई है. हालांकि गढ़वाली की तरह कुमाऊनी भी उत्तराखंड की पुरानी भाषा और बोली मानी जाती है. इन्हीं दोनों भाषाओं के आधार पर 24 वर्ष पूर्व इस राज्य का गठन किया गया था. राज्य में कुल 13 जिले हैं. जिन्हें बोली के आधार पर गढ़वाली और कुमाऊनी मंडल में बांटा गया है। गढ़वाली बोलने वाले क्षेत्रों में जहां 7 जिले उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार और देहरादून आते हैं वहीं कुमाऊँ मण्डल में 6 जिले पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा, चंपावत, नैनीताल और उधम सिंह नगर शामिल हैं।

'बेडू पाको बारो मासा, नारायण! काफल पाको चैता मेरी छैला' (बेडू तो बारह माह पकते हैं, लेकिन काफल तो केवल चैत माह में ही पकता है) उत्तराखंड के इस प्रसिद्ध कुमाऊनी लोकगीत को गाते हुए 95 वर्षीय बछुली देवी के चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान तैरने लगती है. वह उत्साह के साथ बताती हैं कि ऐसे बहुत से कुमाऊनी लोकगीत हैं जिसे गाँव में रहने वाली कई बुजुर्ग महिलाएं और पुरुष अक्सर गुनगुनाते रहते हैं. लेकिन नई पीढ़ी अब कुमाउनी बोलना तो दूर, समझ भी नहीं पाती है. बछुली देवी उत्तराखंड के बागेश्वर जिला स्थित कपकोट ब्लॉक के कन्यालीकोट गांव की रहने वाली है. जहां बुज़ुर्गों द्वारा कुमाऊनी बोली जाती है जबकि यहां की नई पीढ़ी हिंदी में बात करती है.

दरअसल एक भाषा के रूप में कुमाऊनी साहित्य या अन्य दस्तावेज़ के प्रमाण बहुत कम मिलते हैं. जिससे यह केवल एक बोली के रूप में सीमित होकर रह गई है. हालांकि गढ़वाली की तरह कुमाऊनी भी उत्तराखंड की पुरानी भाषा और बोली मानी जाती है. इन्हीं दोनों भाषाओं के आधार पर 24 वर्ष पूर्व इस राज्य का गठन किया गया था. राज्य में कुल 13 जिले हैं. जिन्हें बोली के आधार पर गढ़वाली और कुमाऊनी मंडल में बांटा गया है. गढ़वाली बोलने वाले क्षेत्रों में जहां 7 जिले उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार और देहरादून आते हैं वहीं कुमाऊँ मण्डल में 6 जिले पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा, चंपावत, नैनीताल और उधम सिंह नगर शामिल हैं.

कन्यालीकोट की 87 वर्षीय खनौती देवी कहती हैं कि 'जीवन के लगभग नौ दशकों में मैंने स्थानीय स्तर पर जितना विकास होते देखा उतना ही कुमाउनी बोली और संस्कृति का ह्रास होते भी देखा है. एक जमाना था जब शादियों और तीज-त्योहारों में कुमाऊनी लोकगीत गाए जाते थे. लेकिन आज यह सब कहां देखने को मिलता है? आज जमाना बदल गया है. अब लोकगीत की जगह पर फिल्मी गाने बजाए जाते हैं. डीजे पर सब कुछ बदल गया है. स्वयं मेरे पोता पोती कुमाऊनी बोलते हुए शर्माते हैं. वो लोग गीत को कहां से गाएंगे? मुझे तो ठीक से हिंदी बोलनी भी नहीं आती है. बस थोड़ा समझ लेती हूं.' वह कहती हैं कि जो लोग गाँव छोड़कर शहर चले गए हैं, अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पढ़ा रहे हैं भला उनके बच्चे गाँव की भाषा क्या समझेंगे?

बैसानी गांव की एक बुजुर्ग पानुली देवी कुमाऊनी में कहती हैं, जिसका अर्थ है 'मैंने अपने जीवन के 70 बरस इसी बोली और संस्कृति के बीच गुजारा है. कभी सोचा नही था कि हमारी नई पीढ़ी को कुमाऊनी बोलना तो दूर, समझने में भी कठिनाई आएगी. मेरे दो पोता पोती हैं और दोनों प्राइवेट स्कूल में पढ़ने जाते हैं. पढ़ना अच्छी बात है, लेकिन अपनी बोली को नहीं पहचानना गलत बात है. जब मैं उनसे कुमाऊनी में बात करती हूँ तो वे हंसते हैं और बोलते हैं कि दादी क्या बोलती हो? हमें कुछ समझ में नहीं आता, हिंदी में बोलो हम से. मैं 70 साल की उम्र में हिंदी कहां से सीखूं? जब मैं उनसे कुछ मांगती हूं तो वह अपनी मां को आवाज लगाते हैं कि दादी कुछ मांग रही है. नई पीढ़ी में कुमाऊनी बोली और संस्कृति के प्रति उदासीनता देखकर मुझे चिंता होती है.?

वहीं दूसरी ओर कुमाऊनी बोलने के संबंध में नई पीढ़ी बहुत अधिक गंभीर नज़र नहीं आती हैं. स्थानीय बोली को छोड़ नई भाषा को अपनाती किशोरियां इस बारे में खुलकर बात करती हैं. 12वीं में पढ़ने वाली बैसानी की कुमारी पूजा का कहना है कि 'मुझे कुमाऊनी बोलनी आती हैं. लेकिन यह बात सच है कि इसमें बात करना हमें ओल्ड फैशन लगता है और कई बार शर्म भी महसूस होती है. जब हम कहीं शहर जाते हैं और कुमाऊनी में बात करते है तो लोग हमें अजीब नज़रों से देखते हैं उन्हें पता चल जाता है कि हम गांव से आए हैं और फिर हमें ऐसा लगता है कि वो हमें गंवार समझ रहे हैं. वो हमें ऐसा न समझे इसलिए हम हिंदी में ही बोलना ज्यादा पसंद करने लगे हैं.'

गांव की एक अन्य किशोरी 17 वर्षीय ज्योति का कहना है कि 'जैसे

जैसे हम बड़े हो रहे हैं हमारी मानसिकता ऐसी बन गई है कि हमारे लिए हिंदी और अंग्रेजी ही दैनिक दिनचर्या के लिए ज़रूरी हो गया है. हम नई पीढ़ी यह मानती हैं कि जब हम नौकरी करने जायेंगे तो हमसे इंग्लिश या हिंदी में ही बात की जाएगी, हमारी गांव की भाषा में हमसे कोई बात करने नही आएगा। इसलिए भी हम कुमाऊनी बोलना नहीं चाहते हैं. 11वीं में पढ़ने वाली पिंकी का कहना है कि 'अक्सर घर में माता-पिता हमसे हिंदी में बात करते हैं. वहीं स्कूल में भी शिक्षक हिंदी में ही पढ़ाते हैं. ऐसे परिवेश में अब हम केवल बुजुर्गों को ही कुमाऊनी बोलते देखते हैं तो हमें उनकी बोली बहुत अधिक समझ में नहीं आती है. हम तो फिर भी गांव में रहने के कारण थोड़ा बहुत इसे समझ भी लेते हैं, लेकिन जो परिवार शहरों की ओर पलायन कर चुका है, उनके बच्चे जब गांव आते हैं तो वह बिलकुल भी इसे समझ नहीं पाते हैं.'

कन्यालीकोट के 65 वर्षीय केदार सिंह कहते हैं कि 'एक समय था जब गांव में केवल कुमाऊनी बोली जाती थी. स्कूलों में भी शिक्षक इसी में बच्चों को पढ़ाया करते थे. लेकिन आज नई पीढ़ी को कुमाऊनी बोलने में हिचक होती है. कहीं ना कहीं इसमें दोषी हम भी हैं. हम उनके साथ घर में कुमाऊनी में बात नहीं करते हैं. जबकि यह हमारी संस्कृति और हमारी पहचान है. मैं हमेशा से यही चाहता हूं कि चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हमारे बच्चे चले जाएं, लेकिन वह अपनी भाषा को हमेशा इस्तेमाल करें और बोले ताकि जहां भी जाए वहां हमारी पहचान कायम रहे.'

वहीं समाजसेवी ज्योति का विचार है कि 'कुमाऊनी बोली लगभग सीमित हो चुकी है. नई पीढ़ी द्वारा इसे नाममात्र बोली जाती है. इसके लिए दो कारण विशेष रूप से ज़िम्मेदार हैं एक कुमाऊनी का लिपिबद्ध नहीं होना और दूसरा बड़ी संख्या में पलायन.'

ज्योति के अनुसार भाषा के रूप में कुमाऊनी साहित्य नाममात्र पढ़ने को मिलती है. जिसकी वजह से नई पीढ़ी तक इसे पहुंचाया नहीं जा सका है. वहीं गांव से जो लोग शहरों की ओर पलायन कर चुके हैं अब उनके बच्चे कुमाऊनी बोलने से पूरी तरह वंचित हो चुके हैं. हालांकि मनोरंजन के रूप में ही सही, फिल्म इंडस्ट्री द्वारा कुमाऊनी में तैयार किये जाने वाले गानों ने नई पीढ़ी को इससे जोड़ने का काम ज़रूर किया है. लेकिन जब तक इसे भाषा और साहित्य के रूप में दर्जा नहीं मिलता है, किताबें और कहानियों के रूप में इसे प्रकाशित नहीं किया जाता है, उस वक्त तक कुमाऊनी को नई पीढ़ी तक पहुंचाना और इसे ज़िंदा रखना कठिन होगा. इसके लिए सामाजिक स्तर पर भी प्रयास करने की ज़रूरत है. (चरखा फीचर)

कच्ची शराब का परिवहन करते दो लोग गिरफ्तार, शराब और बाइक की जप्त

बैतूल/मुलताई। मुलताई ग्राम बिसनुर के पास पुलिस ने बाइक पर अवैध रूप से कच्ची शराब का परिवहन करते हुए दो लोगों को पकड़ा है। जिनके पास से 60 लीटर कच्ची शराब और बाइक जप्त कर उन्हें गिरफ्तार किया गया। प्राप्त जानकारी अनुसार मुलताई थाना प्रभारी राजेश सातनकर द्वारा बताया कि मुखबिर से प्राप्त सूचना पर सहायक उपनिरीक्षक एस आर मांडवी और आरक्षक हेमंत मालवी द्वारा बिसनुर के पास से राहुल पुत्र शिवदिन कुबड़े एवं सकडू पुत्र भादू परतेती दोनों निवासी डूडर बाइक से दो ट्यूब में अवैध महुए की कच्ची शराब भरकर बेचने के लिए ले जा रहे थे। जिन्हें पड़कर उनके पास से 60 लीटर कच्ची महुआ शराब और बाइक जप्त की गई। उनके खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत मामला कायम कर उन्हें गिरफ्तार किया गया।

विक्रम, विश्वामित्र एवं एकलव्य खेल पुरस्कार-2024 हेतु आवेदन पत्र 31 जुलाई तक

अप्रैल 2019 से मार्च 2024 में अर्जित खेल उपलब्धि धारक खिलाड़ी कर सकेंगे आवेदन

बैतूल। जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी द्वारा खेल पुरस्कार-2024 एकलव्य, विक्रम, विश्वामित्र, प्रभाष जोशी एवं लाईफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार हेतु ऑनलाइन आवेदन 31 जुलाई 2024 तक आमंत्रित किए गए है। पुरस्कार खेल और युवा कल्याण म.प्र. शासन के नवीन पुरस्कार नियम 2021 के अनुसार 01 अप्रैल 2019 से 31 मार्च 2024 में अर्जित खेल उपलब्धियों के आधार पर प्रदान किये जाएंगे। इसके अलावा साहसिक खेल समुद्र, जमीन, एवं वायु आधारित हेतु भी विक्रम एवं एकलव्य पुरस्कार हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए है। पुरस्कार हेतु पात्रता पुरस्कार राशि व अन्य शर्तें विभागीय वेबसाइट पर पद तथा प्ले स्टोर से खेल और युवा कल्याण के अनुदान एप्प को डाऊनलोड करके भी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदक को ऑनलाइन आवेदन करने के उपरांत आवेदन की प्रति जिस पर पंजीयन क्रमांक अंकित हो के साथ खेल प्रमाण पत्र एवं अन्य अभिलेख की छायाप्रति कार्यालय जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी, मुख्य डाकघर के सामने बैतूल में संचालनालय खेल और युवा कल्याण टीटी नगर स्टेडियम भोपाल में कार्यालयीन दिवसों में 31 जुलाई 2024 तक जमा करना अनिवार्य होगा।

ग्राम पंचायत गोरेगांव के उपसरपंच सहित 11 पंचों ने जनपद पंचायत सीईओ भैंसदेही को सौंपे इस्तीफे

बैतूल। अपने क्रियाकलापों को लेकर चर्चा में रहने वाली भैंसदेही विकासखंड की ग्राम पंचायत गोरेगांव एक बार पुनः चर्चा में आ गई है।ग्राम पंचायत की अनुशासनहीनता और व्यवहार और लगातार निर्माण कार्यों में हो रही अनियमितता की शिकायतों पर कार्यवाही नही होने से नाराज उपसरपंच सहित ग्यारह पंचों ने अपने सामूहिक इस्तीफे भैंसदेही जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को आवेदन पत्र के माध्यम से सौपे है। ग्राम पंचायत के पंचों का कहना है उन्हे ग्राम पंचायत की बैठकों में भी नही बुलाया जाता। कोई मान सम्मान उन्हे जनप्रतिनिधि होने के नाते नही मिलता। गांव की कोई समस्या हम पंचायत को बताते है तो उन्हे लगातार अनदेखा किया जाता है। लगातार पंचायत के द्वारा अपमान जनक व्यवहार किया जाता है। आखिर आहत होकर उपसरपंच दीपक करोले सहित पंच बाजीराव लोखंडे, मीरा मोरले, निम्बा येवले, कमला बारस्कर, सुग्नती मोसिक, निलेश उकडले, कोमल बेले, भोने मोसिक, राजू बारस्कर, सुनील जमुरकर आदि पंचो ने अपना स्तीफा सौप दिया।

इनका कहना-

पंचों के इस्तीफे का आवेदन मिला है। ग्राम पंचायत के पंचों की शिकायत के आधार पर जांच दल गठित कर जांच की जावेगी।

-जितेंद्र सिंह ठाकुर, सीईओ, जनपद पंचायत भैंसदेही

अपनी क्षमता को पहचानकर विद्यार्थी करें लक्ष्य निर्धारित : हेमंत खण्डेलवाल

मेहनत से पढ़ाई करें, सफलता जरूर मिलेगी, बैतूल विधायक नें उत्कृष्ट स्कूल में किया प्रेरणा संवाद

बैतूल। विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि विद्यार्थी अपनी क्षमता को पहचान कर लक्ष्य निर्धारित करें और लक्ष्य प्राप्त करनें के लिए कड़ी मेहनत से पढ़ाई करें ,सफलता जरूर मिलेगी। उन्होनें कहा कि अपनी क्षमता का आंकलन कर लक्ष्य निर्धारित करनें से लक्ष्य हासिल करना सरल हो जाता है। बैतूल विधायक नें कहा कि यह पढ़ाई करनें का समय है इसलिए सभी छात्र-छात्राये एकाग्रता- मेहनत से पढ़ाई कर अपना लक्ष्य हासिल करें। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें उक्त बातें 24 जून को उत्कृष्ट हायर सेकण्डरी स्कूल बैतूल में प्रेरणा संवाद के दौरान छात्र-छात्राओं से कहीं। उन्होनें छात्र-छात्राओं से पढ़ाई ,प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी,भविष्य की प्लानिंग,स्कूल में आवश्यक सुविधाओं सहित अन्य मुददों पर सीधी बातचीत की।

बोले विद्यार्थी-इंजीनियर, डॉक्टर, लॉयर, सांइटिस्ट बनेगें- प्रेरणा संवाद के लिए सोमवार सुबह उत्कृष्ट हायर सेकण्डरी स्कूल पहुचें बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें 11 वी कक्षा में पहुचकर छात्र-छात्राओं से स्कूल की पढ़ाई और भविष्य की प्लानिंग के बारे में चर्चा की। छात्र-छात्राओं नें आत्मविश्वास के साथ बैतूल विधायक को बताया कि वे डाक्टर,इंजीनियर,लॉयर,बैक आफीसर, सांइटिस्ट बनना चाहते है। अपने लक्ष्य के अनुसार ही उन्होनें विषय का चयन किया है और लक्ष्य प्राप्त करनें के लिए मेहनत से पढ़ाई कर रहे है। बैतूल विधायक नें छात्र-छात्राओ को देश के टॉप इंजीनियर,मेडीकल कॉलेजो और उच्च शेक्षणिक संस्थानों की जानकारी दी। उन्होनें नवप्रवेशित विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कहा कि अब पढ़ाई का स्तर बढ़नें के साथ ही एक्जाम का पेटर्न बदल गया है। इसलिए हर क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर में यह जरूरी है कि आनें वाले दस वर्षो में पढ़ाई का क्या उपयोग होगा ? इसकी स्टडी भी की जाये। उन्होंने छात्र-छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में भी करियर बनाने का सुझाव दिया।

नियमित पुस्तकालय जानें की दी सलाह- प्रेरणा संवाद के दौरान बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें छात्र-छात्राओं को प्रतिदिन नियमित लाइब्रेरी जाने की सलाह दी। उन्होनें कहा कि स्कूल की पढ़ाई के साथ ही कम से कम एक घंटे तक लाइब्रेरी में बैठकर अपने कोर्स के साथ ही सामान्य ज्ञान सहित अन्य विषयों की भी स्टडी करें। लाइब्रेरी की स्टडी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक होगी।

स्कूल जीवन की यादें की ताजा- प्रेरणा संवाद के दौरान बैतूल विधायक ने उत्कृष्ट स्कूल के छात्र-छात्राओं के साथ अपने स्कूल जीवन की यादें ताजा की। उन्होंने बताया कि कक्षा 9वी से कक्षा 11 वीं मैट्रिक तक वे इसी स्कूल में पढ़े है। तब यह मल्टीपरपज स्कूल के नाम से जाता था। बैतूल विधायक ने - वे किस कक्षा में बैठते थे, कौन-कौन से शिक्षक उन्हें पढ़ाते थे इसकी यादें ताजा की। उन्होंने बताया कि यहां मौजूद उत्कृष्ट स्कूल के प्रिंसिपल श्री उदयपुरे एवं शिक्षा विभाग के प्लानिंग ऑफिसर श्री शर्मा इसी स्कूल में उनके सहपाठी थे। प्रेरणा संवाद के अंत में उन्होंने छात्र- छात्राओं को पुस्तकों वितरित की ।बैतूल विधायक ने उत्कृष्ट स्कूल को और अधिक सुविधा सम्पन्न कराने का भरोसा दिलाया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट हायर सेकेंडरी स्कूल बैतूल के प्राचार्य सत्येन्द्र उदयपुरे, जिला शिक्षा विभाग के प्लानिंग ऑफिसर सुबोध शर्मा, जिला शिक्षा केन्द्र बैतूल के एपीसी राजेश तुरिया सहित शिक्षक-शिक्षिकायें और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

उत्कृष्ट स्कूल की उत्कृष्टता बनाने में दें योगदान

प्रेरणा संवाद के दौरान बैतूल विधायक नें छात्र-छात्राओं से कहा कि आप लोग सौभाग्यशाली हो क्योंकि आप जिले के बेस्ट स्कूल में पढ़ रहे है। यहाँ के टीचर और स्टाफ भी बेस्ट है तथा यह स्कूल सुविधा सम्पन्न है। उन्होनें कहा कि उत्कृष्ट स्कूल बैतूल को मध्यप्रदेश के बेस्ट स्कूल का तमगा मिल चुका है। इसलिए मेहनत से पढ़ाई कर उत्कृष्ट स्कूल की उत्कृष्टता बनानें मे योगदान दे। मध्यप्रदेश में टॉप करनें वाली उत्कृष्ट स्कूल की छात्रा पूनम घोरे का जिक्र करते हुए बैतूल विधायक नें कहा कि पूनम नें अभाव में रहते हुए भी कड़ी मेहनत कर उत्कृष्ट सफलता हासिलकर जिले का नाम रोशन किया था। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होनें पूनम को हर संभव मदद की। मेहनत से पढ़ाई कर पूनम नें दिल्ली विश्वविद्यालय में 10 हजार विद्यार्थियों में सेकेण्ड रेंक हासिल की थी।

तरक्की की राह दिखाती है शिक्षा

शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें कहा कि शिक्षा का जीवन के हर क्षेत्र में बहुत महत्व है क्योंकि शिक्षा तरक्की की राह दिखाती है। उन्होनें कहा कि आज दुनिया में जो भी देश आगे है वहाँ शिक्षा और शिक्षक को ज्यादा महत्व - सम्मान दिया है। उन्होनें बताया कि फिनलैण्ड दुनिया का बेस्ट एजुकेशन सिस्टम वाला देश है। यहाँ हर कोई शिक्षक-प्रोफेसर बनना चाहता है। क्योंकि शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ ही देश के भविष्य का निर्माण भी किया जाता है।

पिता ने पुत्र के साथ मिलकर की थी छोटे भाई की हत्या

पूर्णा नदी में मिले अज्ञात शव का पुलिस ने किया खुलासा

बैतूल। पूर्णा नटी में रस्सी से बंधा हुए शव मिलने से भैंसदेही क्षेत्र में सनसनी फैल गई थी। शव पर चोट के निशान होने से पुलिस इसे हत्या का मामला जानकर चल रही थी। इस मामले में पुलिस ने विवेचना प्रारंभ की, तो मामला हत्या का ही निकला। पुलिस ने अंधे कत्ल का खुलासा करते हुए बताया कि जमीनी विवाद में पिता ने पुत्र के साथ मिलकर छेटे भाई को मौत के घाट उतारा था और शव को पूर्णा नदी में रस्सी से बांधकर फेंक दिया था। भैसदेही पुलिस ने अज्ञात शव की पहचान ग्राम ढोण्डी निवासी रमेश पिता काल्या भुसुमकर उम्र 40 साल के रूप में की है। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने हत्या करने के बाद शव को छिपाने के लिए कंबल एवं रस्सी से बड़े-बड़े पत्थर से बांध कर श्मशान घाट पर पूर्णा नदी में बहा दिया था।

नदी में तैरता दिखाई दिया था शव - भैसदेही थाना प्रभारी अंजना धुर्वे ने इस अंधे कत्ल का खुलासा करते हुए बताया कि 20 जून को तकरीबन रात्रि 9 बजे ग्राम कोटवार व्दारा पुलिस को अज्ञात व्यक्ति का शव ग्राम ढोण्डी के शमशान घाट, पूर्णा नदी के पानी में डूबा हुआ दिखाई देने की सूचना दी थी। अज्ञात शव को पानी से निकाला गया। शव मे बड़े-बड़े पत्थर बंधे हुए मिले एवं शरीर पर चोटों के निशान भी पाए गए। पुलिस ने ग्राम कोटवार की रिपोर्ट पर मर्ग कायम कर विवेचना शुरू की थी।

परिजनों ने शिनाख्त से किया इनकार - आरोपियों को तलाश के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में थाना भैसदेही से टीम गठित की गई। टीम द्वारा गांव के लोगों से पूछताछ की, जिसमें गांव के लोगों द्वारा पहले तो मृतक को पहचानने से इंकार किया गया। परिजनों ने भी पहचानने से मना कर दिया। लेकिन अगले दिन गांव के कुछ लोगो को बात करते पाया कि मृतक गांव का ही रमेश भुसुमकर है। जांच के दौरान पुलिस को यह भी पता चला कि मृतक रमेश भुसुमकर का जमीनी विवाद उसके बड़े भाई और भाई के बड़े लड़के से था। इस आधार पर पुलिस ने जांच शुरू की, तो इसके बाद पुलिस की कड़ी पूछताछ में उसके परिजनों द्वारा भी हत्या किया जाना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपियों के विरुध्द धारा 302, 201 का अपराध पंजीबद्ध किया है।

शिनाख्त नहीं करने पर हुआ संदेह- परिजनों द्वारा पहले पहले मृतक को पहचानने से मना करने एवं बाद में पहचान करने से प्रथम दृष्टया मृतक के परिजनों पर ही पुलिस को संदेह हुआ। पुलिस ने सदेह के आधार पर फगना भूसूमकर और रवि उर्फ राजू की तलाश पतारसी कर 23 जून को अभिरक्षा में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में आरोपियों ने अपना जुर्म स्वीकार कर बताया कि रमेश भुसुमकर उसकी जमीन बेचने की बात कर रहा था। वह उसके हिस्से की जमीन भी जोतने नहीं दे रहा था। इसीलिए उसकी हत्या कर शव को नदी में बहाया था। 17-18 जून की रात करीब 12 बजे दोनों ने मिलकर मृतक रमेश की हत्या कर दी। इसके बाद शव को छिपाने के लिए बैलगाड़ी के जुआड़ा (जिससे बैलों को जोता जाता है) पर रख कर कंबल एवं रस्सी से बांध दिया। साथ ही बड़े-बड़े पत्थर बांध कर शव को शमशान घाट पूर्णा नदी में बहा दिया।

इनकी रही सराहनीय भूमिका- उक्त प्रकरण में थाना प्रभारी भैंसदेही निरीक्षक अंजना धुर्वे, उपनिरीक्षक प्रीति पाटिल, सहायक उप निरीक्षक अवधेश वर्मा, अजय भाट, प्रधान आरक्षक छोटेलाल वछानिया, आरक्षक नितिन ठाकुर, मनोज इवने, नारायण जाट, महिला आरक्षक अंकिता शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

किसानों का खेतों में जाने का रास्ता हुआ बंद

किसानों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

बैतूल/मुलताई। मुलताई के ग्राम चिखली कला के करीब 20 से 25 किसानों का अपने खेत में पैदल, बैलगाड़ी एवं ट्रैक्टर से आने जाने का रूढ़िगत रास्ता बंद कर दिया गया जिसको लेकर किसानों में रोष व्याप्त है। किसानों ने एसडीएम से रास्ता खुलने की गुहार लगाई है। किसानों ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि मुलताई- छिंदवाड़ा मुख्य मार्ग से होकर खेतों में जाने वाले रास्ते को संजय शिवशंकर रघुवंशी और उसके भाई योगेश द्वारा

द्वारा 16 जून को नांगर बखर कर बंद कर दिया गया । रविवार 23 जून को शाम को उक्त रास्ते से मजदूर आ रहे थे। जिन्हें संजय द्वारा धमकी दी कि आज यहां से आ गये, दोबारा यहां से मत आना। किसानों ने बताया कि दोनो भाईयो द्वारा हमारे उक्त रास्ते को नागर बखर कर बंद कर दिये जाने से हमारे खेतो में आना जाना बंद हो गया है। जिससे फसल बुआई में परेशानी हो रही है। हम हमारे खेतों में फसल की बुआई नहीं हो पा रहे है। चिखली कला से आए ग्रामीण दिलीप रघुवंशी, नंदा सूर्यवंशी, रमेश, अशोक, चंद्रशेखर, मोहन, मनीष आदि ने प्रभारी एसडीएम अनीता पटेल को उक्त समस्या से अवगत कराया। जिसके बाद उन्होंने तत्काल संबंधित नायब तहसीलदार, आर आई और पटवारी को मौके पर जाने के निर्देश दिए। साथ ही किसानों को हो रही समस्या से तत्काल निजात दिलाने के लिए कहा गया।

महिला के आतंक से नगर में दहशत

हसिया से कटी एक व्यक्ति की उंगली अनेक लोगों पर किया हमला

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर में घूमती एक महिला ने नगर की सड़कों पर जमकर हंगामा किया है। कई बार राह से गुजरते लोगों पर हमला किया, जिसमें तीन लोग जख्मी हो गए। कुछ लोग मोटरसाइकिल पर सवार होने के कारण महिला के हमले का शिकार होने से बच गए, किंतु बैतूल रोड स्टेट बैंक से पैदल वापस आ रहे सब्जी व्यापारी पति पत्नी उक्त महिला के हमले का शिकार हो गए। नेहरू वार्ड निवासी राजू कावरे ने बताया कि वह और उसकी पत्नी रेखा कावरे बैतूल रोड स्थित स्टेट बैंक से वापस पैदल अपने घर आ रहे थे कि मंगलवारी बाजार के सामने मुख्य मार्ग से आ रही एक महिला ने हाथ में हंसिया से पति-पत्नी पर हमला कर दिया, जिससे उसके सीधे हाथ का उगला कट गया वहीं पत्नी रेखा हाथ में चोट आई है।

राजू कावरे को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया, जहां उसका उपचार चल रहा है। बताया जा रहा है कि उक्त महिला ने जय स्तंभ चौक पर भी एक व्यक्ति और एक महिला पर हमला कर दो लोगों को जख्मी कर दिया । कुछ लोगों ने इसकी जानकारी मुलताई पुलिस को दी किंतु पुलिस विभाग का कहना है कि उक्त महिला मानसिक विक्षिप्त, एवं पागल हैं ऐसी स्थिति में हम क्या कर सकते हैं उन्हें अस्पताल ले जाना चाहिए। किंतु उक्त महिला पागल है या मानसिक रूप से बीमार है इसकी अब तक कोई पुष्टि नहीं हुई है सब्जी व्यापारी राजू कावेरी पर हमले की जानकारी जैसी उनकी पुत्री को लगी पुत्री ने उक्त महिला को गायत्री नगर में पड़ा और पुलिस के पास ले जाने का प्रयास करने लगी गायत्री नगर में इस दौरान बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ लग गई । इसके बाद थाना प्रभारी ने पुलिस स्टाफ को भेज कर उक्त महिला को थाना मुलताई में बुलाया है।

अज्ञात महिला ने इन लोगों पर भी किया हमला

सबसे पहले महिला ने जय स्तंभ चौक पर नारियल की दुकान लगाने वाली जीजा बाई बारस्कर को बाल पकड़ कर खींच लिया जिससे वे सड़क पर गिर गई। जिससे जीजा बाई का सर फूट गया और उन्हें सर में गंभीर चोट आई। उनके बेटे सूरज ने तत्काल उन्हें अस्पताल पहुंचाया। वहीं बस स्टेंड पर अक्षय मुन्ना लाल प्रजापति जो अपनी बाइक से अपने घर जा रहा था, अचानक से उस पर हंसिया से हमला कर दिया जिसके कारण उसे चोट आई।

जिले के 9 केंद्रों पर 2 हजार 925 लोगों ने दी एमपीपीएससी की परीक्षा

1 हजार 38 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

बैतूल। अफसर बनने के लिए बड़ी संख्या में युवा एमपीपीएससी की परीक्षा में सम्मिलित हुए। जिला मुख्यालय पर परीक्षा के लिए 9 परीक्षा केन्द्र बनाए गए थे। कड़ी निगरानी के साथ परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा हाल में पहुंचने के पहले ही अभ्यर्थियों की कड़ी चौकिंग की गई। जूते-मौजे, दुप्पट्टा बाहर रखने लगाया गया।

चेकिंग के बाद ही विद्यार्थियों को परीक्षा कक्ष के भीतर प्रवेश दिया गया। परीक्षा केंद्र पर नजर रखने के लिए फ्लाईंग स्क्वायड बनाए गए थे, जिन्होंने परीक्षा समय में अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक रविवार को बैतूल जिले में 9 परीक्षा केन्द्रों पर एमपीपीएससी की परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा दो पालियों में आयोजित की गई। पहली पाली 10 बजे से 12 बजे तक और दूसरी पाली 2.15 से 4.15 तक चली । परीक्षा में कुल 3 हजार 963 अभ्यर्थी सम्मिलित होने थे, लेकिन परीक्षा में 2 हजार 925 ही अभ्यर्थी ही उपस्थित हुए। 1 हजार 38 अभ्यर्थी परीक्षा में अनुपस्थित रहे। दूसरी पारी में उपस्थित और अनुपस्थित प्राप्त नहीं हुई थी।

अभ्यर्थी के जूते-मोजे उतरवाए बाहर

एमपीपीएससी की परीक्षा कड़ी निगरानी के साथ आयोजित हुई। विद्यार्थियों को 1 घंटे पहले ही बुला लिया था। चेकिंग के बाद ही अभ्यर्थियों को कक्ष के भीतर प्रवेश दिया गया। कुछ अभ्यर्थी जूते-मौजे पहनकर चले गए थे। ऐसे अभ्यर्थियों के जूते बाहर उतरवाए गए। महिलाओं के मंगलसूत्र सहित अन्य आभूषणों की चौकिंग हुई, इसके बाद ही उन्हें परीक्षा हॉल में प्रवेश दिया गया। प्रवेश पत्र, परिचय पत्र के अलावा साथ में कोई अनुचित साधन ले जाने पर पूरी तरह से प्रतिबंध था। घड़ी भी पहनकर भीतर जाने की अनुमति नहीं थी।

फ्लाइंग स्क्वायड ने किया केन्द्रों का निरीक्षण

एमपीपीएससी की परीक्षा केन्द्रों पर निगरानी के लिए 5 फ्लाईंग स्क्वायड बनाए गए। इन फ्लाईंग स्क्वायड में एसडीएम, तहसीलदार सहित अन्य अधिकारियों को नियुक्त किया गया था। परीक्षा शुरू होते ही अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों पर पहुंचकर निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। पहली पाली और दूसरी पाली दोनों में फ्लाईंग स्क्वायड अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों पर निगरानी करते रहे।

होशंगाबाद मुख्यालय की हलचल..

संजीव डे राय

420 करने वालों पर एफआईआर दर्ज नहीं क्यों..? रसूखदार उनमें शामिल..?

420 करने वाले पर प्रशासन कार्रवाई नहीं कर पा रहा दूसरी तरफ प्रभावशाली के कहने पर पुलिस मामला दर्ज करने से नहीं चूक रही। 420 करने वालो का जबकि कोई पक्षधर नहीं..? टप खरीदी के मामले में नगर के एक प्रभावशाली ने पुलिस पर दबाव बना कर अपने विरोधी के विरुद्ध न केवल एफआईआर दर्ज करवाकर महिनों जेल में बंद रखवाया, न्यायालय के फैसले से जो बेकसूर साबित हुआ। अब न्यायालय के आदेश से मामला दर्ज करने वाले के विरुद्ध प्रशासन को झूठे मामला दर्ज करने वाले पर कार्रवाई के आदेश का पालन कराना था प्रशासन ने क्या किया खबर तक बाहर नहीं आई.! फिर एक रसूखदार ने पंजीकृत पत्र नजूल में प्रस्तुत कर सरकारी जमीन का नामांतरण करने नजूल में आवेदन दिया नजूल अधिकारी आर एल भम्मानी ने दस्तावेज कूट रचित पाया, आवेदन रद्द कर पंजीकृत पत्र की जांच के लिए रजिस्टार को भेजा उसकी जानकारी भी बाहर नहीं आ पाई। रसूखदार के विरुद्ध बगैर एफआईआर दर्ज नहीं कराने का आखिर कारण क्या होगा। एक स्कूल संचालक ने धोखाधड़ी कर पंजीकृत दस्तावेज में जमीन का रकबा कूट रचित कर बढ़ा लिया, मामला पकड़ में आया, प्रशासन ने रिकॉर्ड में दस्तावेज संशोधित तक करवा दिए पर कूट रचनाकार और धोखेबाज स्कूल संचालक के विरुद्ध एफआईआर दर्ज नहीं कराई ऐसा क्यों..

अखबार वालों की मदद करने में राजेन्द्र का भी जवाब नहीं..?

पर्दे के पीछे रहकर कितनों का भला कर जाते और किसी को कानों-कान खबर नहीं होने देते.. ऐसे हमारे राजेंद्र भाई वास्तव में राजनीति का लाभ दूसरे को कैसे दिला सकें पर मनन करते हैं। एक नेता का दामन पकड़ कर राजनीति की जरिए दूसरों का भला करने की चाह रखने वाले उन कम लोगों में शामिल राजेंद्र भाई कोरोना काल में अखबार वितरण करने वाले हाकरों की मदद करने में सबसे आगे थे कम लोगों को ही मालूम होगा, 100 से उपर हाकरों की उन्होंने उस समय राशन देकर मदद की जब लोग घरों से निकलने में घबराते थे, अखबार लेने से कतराते थे, अखबारों की गिरती संख्या के कारण अखबार बांटने वाले पर उसका सीधा असर था ऐसे मौके पर उनकी मदद तब एक राहत वाली थी, अखबारों की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी फोटो ग्राफर की भूमिका पर अखबारो द्वारा ही उपेक्षित ऐसे फोटो ग्राफरों को सम्मानित कर उन्हें मजबूती प्रदान करने में उनका जबाव नहीं था। अखबार और अखबार से जुड़े परिचित अपरिचित उनकी नजर में एक रहे। आज एक अखबार वितरक पर वक्त की मार ने उन्हें सक्रिय कर दिखाया, जेसे ही मालूम हुआ अपने पुत्र के आप्रेशन के लिए परेशान अखबार वितरक तकलीफ में है वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों से तुरंत सम्पर्क कर चिकित्सालीय मदद को दौड़ पड़े जिसमें विभागीय मंत्री को भी उन्होंने झंझोड़ डाला..

प्राकृतिक संसाधनों से रोजगार और आर्थिक मजबूती

कहा जाता है यही नहीं शत-प्रतिशत पूरी नर्मदा घाटी यदि आधुनिक तकनीक साधनों से विकसित की जाए तो यह क्षेत्र तेजी से विकसित हो सकता है। आज दूध और से बने प्रोडक्ट मार्केट में तेजी से व्यापार कर रहे है। ऐसे हालात में आयुर्वेद में आज पूरा विश्व काम कर रहा है। फिर नर्मदा घाटी की उपेक्षा क्यों दो बड़े पहाड़ो के बीच नर्मदापुरम सम्भाग पड़ता है इन जंगलों में कीमती जड़ी बूटियां मौजूद है जिससे गंभीर बीमारियों का इलाज हो सकता है बस जरूरत है शोध कर्ताओं की और एक रिसर्च सेंटर की जो अनुभवी लोग और नई युवा पीढ़ी के साथ मिलकर यहां साकार किया जा सकता है जिससे करोड़ो जीवनों को बचाया जा सके। सांसद दर्शन सिंह चौधरी और राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने एक सम्मान समारोह में हालिया कहा कि हम एक और एक ग्यारह है और जनहित कार्य की अनदेखी नहीं करेंगे.. वे इस विषय पर क्या वे रुचि दिखायेंगे.. क्योंकि नर्मदापुरम को वैसे भी इंडस्ट्रीयल क्षेत्र बनाने की कोशिश की जा रही थी ग्राम डोलरिया में इस्पात फैक्टरी लगाने की योजना थी बात यह है कि इंडस्ट्रियल क्षेत्र बनता है तो प्राकृतिक पानी के साधनों को प्रदूषित कर दिया जाएगा। खास कर इससे नर्मदा नदी तो नष्ट हो जाएगी वैसे भी नर्मदा नदी का पानी पीने लायक नही यह कई शोध बताते है यदि प्राकृतिक संसाधनों से योजनाओं को बनाया जाता तो शायद वो ज्यादा कारगर हो।

सांसद और राज्यसभा सांसद की ओर लगी नजर..

सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने सम्मान समारोह में खुद को दर्शनशास्त्र का छात्र बताकर सांसद महोदय ने जैसे पत्रकारों को ताकीद कर दिया उनके आलोचना करना पर खबरों के जरिए उन्हें लड़वाने की कोशिश नहीं करना क्योंकि हम सब आखिर में एक ही पार्टी के है। साथ ही यह कहकर हौसला भी बढ़ाया सामूहिक हित के कार्यों की वे अनदेखी नहीं करेंगे प्राथमिकता देंगे फिर तोड़े बजरिया स्कूल पर आश्चर्य और अफसोस जताना, दोनों नेताओं का क्या माना जाएं वैसे भी सांसद महोदय ने अपने वक्तव्य में पत्रकारों के सामने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि चुनाव उन्होंने पूरी सुचिता से लड़ा और जीवन पर्यन्त वो सुचिता के ही रहेंगे.. इन शब्दों और वाक्यों के तभी से यहां अर्थ निकाले जा रहे जा रहें।

और अब चलते चलते..

सरकारी कालेज का नाम राजस्व रिकार्ड में शासकीय दर्ज क्यों नहीं सरकार इस पर भी तो ध्यान दें..?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत प्रदेश सरकार शासकीय नर्मदा महाविद्यालय को प्रधानमंत्री एक्सीलेंस कॉलेज में परिवर्तित करने जा रहा। साथ ही विभिन्न रोजगार मूलक नये पाठ्यक्रम विषयों का समावेश सरकारी महाविद्यालय में किया जा रहा। जो होना भी चाहिए लेकिन पालकों और विद्यार्थीयों की वर्षो पुरानी बीएड और बीपीएड पुनः प्रारंभ करने मांग हालातों को देखते हुए शासनाधीन इस महाविद्यालय में प्रारंभ किया जाना समय की मांग है। इसे प्रारंभ किए जाने की पहल की जानी चाहिए। फिर ताज्जुब इस बात को लेकर यहां यह भी है कि शासकीय कहलाने वाले नर्मदा महाविद्यालय को शासनाधीन हुए 40 वर्ष हो गए फिर भी इस सरकारी महाविद्यालय का रिकार्ड एसएनजी स्कूल के भांति राजस्व रिकार्ड में आज दिनांक तक दुरुस्त नहीं हो पाया है जिसका लाभ निजी शिक्षा माफिया दोनों हाथों से उठाते आ रहा

बैंक नोट प्रेस में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

देवास। बीएनपी में रक्तदान शिविर का आयोजन रेड क्रॉस सोसाइटी के तत्वाधान में चिकित्सालय पर संपन्न हुआ। शिविर में बीएनपी के 50 से अधिक कर्मचारी, अधिकारियों, सीआईएसएफ के जवानों ने रक्तदान किया। कमल सिंह चौहान ने बताया कि सर्वप्रथम शिविर का उद्घाटन बीएनपी के मुख्य अतिथि मुख्य महाप्रबंधक एस महापात्र, एवं विशेष अतिथि महाप्रबंधक के एन महापात्र, एवं केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के समादेष्टा शिव रतन मीणा ने मां सरस्वती के प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलित कर किया। चिकित्सालय की ओर से सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर डॉक्टर पीयूष आचार्य एवं भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव डॉक्टर धूत ने मौके पर उपस्थित कर्मचारियों को रक्तदान के लिए प्रेरित करने के लिए और रक्तदान के रूप में फैली भ्रांतियां को दूर करने के लिए लोगों को जागरूक किया व रक्तदान के बारे में अनेक जानकारियां दी।

तबला कार्यशाला (ताल आराधना) में युवा तबला वादकों एवं विद्यार्थियों ने तबला वादन की बारीकियों को समझा

धार। एक दिवसीय तबला कार्यशाला (ताल आराधना) का आयोजन रिदम म्यूजिक एकेडमी के द्वारा किया गया कार्यशाला का शुभारंभ सरस्वती पूजन कर किया।

देश के प्रसिद्ध तबला वादक इन्दौर के पंडित विलास खरगोनकर के सानिध्य में नगर के अनेक युवा तबला वादकों एवं विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया एवं तबला वादन की बारीकियों को समझा एवं सीखा। कार्यशाला में भाग लेने वाले इन सभी प्रतिभागियों का यह सौभाग्य है कि प्रसिद्ध तबला वादक पंडित खरगोनकर स्वयं धार नगर में पधारे और सभी को मार्गदर्शन किया गत वर्ष पंडितजी को मधुवन संस्था द्वारा श्रेष्ठ कला गुरु का सम्मान मिला।

तबला कार्यशाला 10.30 बजे से 4.30 रही, कार्यशाला के पश्चात 5.30 बजे तबला वादन व शास्त्रीय गायन की प्रस्तुतियां हुई। प्रथम प्रस्तुति कीर्तन भाटिया द्वारा तबला वादन कीया शुभम डोंगरे व मानस दवे द्वारा तबला जुगलबंदी की।

विकास चौहान द्वारा शास्त्रीय गायन और भजन प्रस्तुति दी गई जिसमें तबला पर संगत गौरव मौर्य व हरमोनियम पर संगत अमन दुबे ने की । एकल तबला वादन मोहित शाक्य ओर तरूष अग्रवाल द्वारा त्रिताल में वादन किया जिसमें हरमोनियम पर संगत रजत सेन ने की। रिदम म्यूजिक एकेडमी के संचालक योगी पंवार द्वारा तबला कार्यशाला और कार्यक्रम आयोजित किया था।

कबीर जयंती पर महान समाज सुधारक को कविताओं से काव्यांजलि अर्पित की

धार। मध्यप्रदेश लेखक संघ की धार ज़िला इकाई द्वारा महान समाज सुधारक और समन्वय को प्रणेता कबीरदास जी की जयंती पर काव्य समारोह का आयोजन संस्था के अध्यक्ष श्रीवल्लभ विजयवर्गीय के रासमंडल स्थित निवास सूरज भवन पर किया गया । समारोह की अध्यक्षता कवि हरिहरदत्त शुक्ल ने की।सरस्वती वंदना के बाद नंदकिशोर उपाध्याय ने अपनी रचना , 'तुम आई जीवन में आया बसंत , जीवन के एकाकी पन का हुआ अंत' की प्रस्तुति पर खूब प्रशंसा बटोरी । श्रीवल्लभ विजयवर्गीय ने अपना नवगीत, 'अच्छा होता आंगन के कोने में दिया जलाते, गमले की तुलसी से दो बातें भी कर जाते' से गोष्ठी को ऊँचाई दी । समारोह के अध्यक्ष हरिहरदत्त शुक्ल की रचना 'यूँही जो किताब के खोली ज़िन्दगी की, यादों के पन्ने पलटते चले गये' सुना कर वातावरण को भाव विभोर कर दिया। अन्य कवियों ने भी कविता के माध्यम से महान कवि कबीर जी को श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये। युवा अभिभाषक अमन विजयवर्गीय ने सभी का आभार माना।

पैरा अंतर्राष्ट्रीय बैडमिंटन स्पर्धा युगांडा में भाग लेने हेतु राहुल सिंह को मदद

धार। सिमबायोटेक फार्मा लेब, प्रा.लि.पीथमपुर द्वारा राहुल सिंह विमल को पैरा अन्तर्राष्ट्रीय बैडमिंटन स्पर्धा युगांडा में 29 जून को प्रतिभागिता करने हेतु आर्थिक सहायता राशि 50 हजार रूपये का चैक प्रदान कर सम्मानित किया गया। राहुल सिंह विमल वर्ष 2023 में भी युगांडा मे आयोजित पैरा बैडमिंटन अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता भाग लेकर कास्य पदक प्राप्त कर चुके है।

अमृत योजना पानी बचाओ के संदेश के साथ संगीत निशा संपन्न

देवास। संचालक अनिल नाईक ने बताया कि, लव कुश सुर संगम संस्था देवास द्वारा संपन्न संगीत निशा में उपस्थित जन समुदाय, सिंगर एवं अतिथियों के बीच कलेक्टर ऋषव के मार्गदर्शन में चल रही अमृत योजना अभियान के संबंध में वरिष्ठ नागरिक संस्था के संचालक गंगा सिंह सोलंकी ने अपने विचार रखे और सभी को इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया । इस अवसर पर उपस्थित तहसीलदार सपना शर्मा, राजस्व निरीक्षक लखन पुरबिया, पटवारी आरती वर्मा, अजय दायमा, एवं दीपिका बोरीवाल का लव कुश संस्था एवं वरिष्ठ नागरिक संस्था के द्वारा मोतियों की माला एवं दुपट्टे पहनाकर सम्मान किया गया। उपरोक्त टीम द्वारा शंकरगढ़ देवास में स्थित राम मंदिर की कृषि भूमि पर अवैध कब्जे को न्यायालयीन प्रक्रिया के द्वारा निपटारा कर के वास्तविक कब्जेदार को भूमि दिलाई गई। सह संचालक रामजीत सिंह, मनीष उपाध्याय जयंत रेडेकर, रानी सोलंकी, नीरज सेंगर, कविता निगम, शक्तिवर्धन निगम, प्रीति चौधरी,अमोल मोरे इंदौर, ओम प्रकाश पाटनी सोनकच्छ, राजेंद्र वडनेरे, साधना श्रीवास्तव, दीप्ति निगम,रानी तंवर,गणेश तंवर,शहजाद पठान,शबनम पठान, दिलीप तिलक, एचआर राजपूत, डीके यादव, आशा दुबे, दीप्ति गुप्ता, जीवन लाल, संतोष भोंसले, विवेक धवले, बसंत जैन, राजिंदर पाल सिंह, अभिषेक शर्मा एवं बेबी शर्मा (5वर्ष)द्वारा एक से बढ़कर एक शानदार प्रस्तुति से सभी को आनंदित कर दिया। ग्रुप की सुरीली सिंगर, साधना श्रीवास्तव, रानी तंवर एवं राजेंद्र वडनेरे का जन्म दिवस हर्षोल्लास से मनाया। गायिका एवं रचनाकार कवियित्री प्रीति चौधरी द्वारा अपनी शानदार एंकरिंग से संपूर्ण कार्यक्रम को रसमय कर श्रोताओं को एक सूत्र में बांधना काबिले तारीफ रहा। संस्था के सह संचालक रामजीत सिंह द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

करोड़ों की संपत्ति का केयर टेकर सेवानिवृत्त एक सैनिक..!

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

विरासत के रुप में आज भी अंग्रेजी शासनकाल की एक बेशकीमती भूमि का टुकड़ा और उस वक्त का एक बना हुआ भवन नगर में मौजूद है। हालांकि इस भवन की मिल्कियत को लेकर नगर में प्रपंच सुने गए, गरीब की... सभी की भौजाई वाली कहावत केवल तत्कालीन कलेक्टर निशांत बरबड़े के कारण चरितार्थ नहीं हो पाई जिससे करोड़ों की जमीन सहित अंग्रेजी शासनकाल की स्मृति नगर में बच सकी है, हालांकि करोड़ों की यह संपत्ति भू-माफियाओं की नजर में होते हुए भी बच रह गई यह एक बड़ी बात है। जिसे बचाना स्थानीय नागरिकों का दायित्व है अन्यथा दायित्वों से बचने वाले प्रशासनिक अधिकारियों की लापरवाही से यह धरोहर भी प्राचीन बजरिया स्कूल की तर्ज पर उन गैर जिम्मेदारों के कारण बलि का बकरा बना दी जायेगी जिन पर विश्वास करना मजबूरी है।हम बात कर रहे हैं। पुलिस अधीक्षक निवास के ठीक सामने स्थित नर्मदा आफिसर्स क्लब जिसका निर्माण सन् 1911 में ब्रिटिश साम्राज्य में हुआ था, इस क्लब भवन का निर्माण पाश्चात्य शैली में बना हुआ है, आज भी उस काल की ईमानदारी और कला शैली की व्याख्या कर रहा प्रशासनिक हस्तक्षेप में रहकर भी जो देखरेख के अभाव में खंडहर में तब्दील हो चला, हालांकि कहा जाता है कि इस बेशकिमती करोड़ों की विरासत पुरातत्व

धरोहर को सेवानिवृत्त होमगार्ड सैनिक अनुज श्रीवास्तव बरसों से यहां काबिज होकर अघोषित स्वयंभू केयरटेकर बने हुए कहे जाते हैं। इसे लेकर फिर अबतक कोई अंगुली नहीं उठी.. बताया जाता है कि अनुज श्रीवास्तव का जबकि स्वयं का निजी निवास कालिका नगर में स्थित है। पाश क्षैत्र में यह क्लब अंग्रेज शासन काल का यहां मूड कोट लान टेनिस कोर्ट बना हुआ है साथ ही अंतराष्ट्रीय स्तर का हार्ड कोट लान टेनिस कोर्ट भी, बेडमिंटन कोर्ट, टेबल टेनिस, मिनी जिम भी इसमें मौजूद है। किंतु नगर की इस धरोहर की अनदेखी क्लब कार्यकारणी समिति अक्रियाशील होने के कारण गुम रही है। क्योंकि खेल गतिविधियों पर विराम लगा हुआ है, सालों उपेक्षित रहे ऑफिसर्स क्लब में क्षैत्रिय ग्रामीण बैंक में आफीसर रहे सुधीर विष्ठ की रुचि ने काफी परिवर्तन किया, कार्यकारिणी में सुधीर विष्ठ की भूमिका सचिव की रही लेकिन उनकी मृत्यु ने इस बेशकीमती क्लब को फिर लावारिस हालत में पहुंचा दिया। इस बार इस क्लब की जीवंतता के लिए बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी विलास नीले ने नवीन कार्यकारिणी गठित की मांग को लेकर सांसद सहित राज्यसभा सांसद से मुलाकात कर गुहार लगाई है। इस विरासत को बचाने के लिए

क्लब अध्यक्ष कमिश्नर/कलेक्टर के अधीन इस नर्मदा आफिसर्स क्लब और टेनिस कोर्ट का जीर्णोद्धार शीघ्र कर दिया जाना चाहिए। गौरतलब हो कि अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी आध्या तिवारी ने इस टेनिस कोर्ट में अपने पिता दीपक तिवारी से प्रशिक्षण लेकर देश दुनिया में पहले होशंगाबाद और अब नर्मदापुरम का नाम गौरवान्वित कर रखा है।

नगर पंचायत की बैठक कोरम के अभाव में स्थगित सीएमओ,नो पार्षदों ने किया बैठक का बहिष्कार

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। नगर पंचायत परिषद की बैठक कोरम के अभाव में स्थगित कर दी गई है। नगरपालिका अधिकारी जीएस राजपूत ने बताया कि आगामी बैठक 26जून को दोपहर 3बजे आमंत्रित की गई है। आज इस नगर पंचायत परिषद की बैठक में नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटैल भाजपा, नगर पंचायत परिषद उपाध्यक्ष आकाश पटैल भाजपा, पार्षद आशीष

विश्वकर्मा भाजपा, वरिष्ठ कांग्रेसी पार्षद धर्मदास बेलवंशी ही उपस्थित थे। नो पार्षदों ने बैठक का बहिष्कार किया। वहीं दो पार्षद नगर से बाहर जाना बताया गया है।उल्लेखनीय है कि सोहागपुर नगर पंचायत परिषद में 15वार्ड हैं। नगर पंचायत परिषद के चुनाव में भाजपा के 9पार्षद विजयी रहे थे। वहीं एक निर्दलीय पार्षद भी भाजपा में शामिल हो गए थे। कांग्रेस के 5 पार्षदों ने विजयश्री प्राप्त की थी। अध्यक्षीय के चुनाव में भाजपा की श्रीमति लता यशवंत पटैल को विजयी घोषित हुई थी। लेकिन लम्बे अरसे से नगर पंचायत परिषद में सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा था। जो नगर में हमेशा सुर्खियों बाजार की खबर बन जाती थी ?। आज सत्ता पक्ष भाजपा के पार्षद श्रीमति शोभा अहिरवार, जगदीश अहिरवार पूर्व पार्षद, श्रीमति अमृता चौरसिया, राकेश चौरसिया पूर्व पार्षद श्रीमती कविता साहू,दीपक साहू पूर्व पार्षद, पार्षद शबाना,वसीम खान, एवं शकुन सराठे वहीं विपक्षी कांग्रेस के वरिष्ठ पार्षद जमील खान, श्रीमति हेमलता कहार ,मोहन कहार पूर्व पार्षद, भास्कर मांझी के हस्ताक्षरों से लिखित आवेदन नगर पालिका अधिकारी जीएस राजपूत को दो बजकर 42 मिनट पर प्रदान किया गया। इस आवेदन में अंकित किया गया था कि विषय परिषद की बैठक का बहिष्कार करने बावत।महोदय उपरोक्त विषय में लेख है कि हम पार्षद गणों के वार्डों में निर्माण कार्य जैसे रोज नाली निर्माण का कार्य न होने से असंतुष्ट हैं। हम पार्षदगणों के वार्डो में निर्माण कार्य नहीं हो पा रहे है। हम सभी पार्षदों ने बार-बार निवेदन किया है। इसी कारण हम परिषद की बैठक का बहिष्कार करते हैं। हमारा विरोध दर्ज किया जाए।उल्लेखनीय है कि विगत दिवस भी पलकमती नदी को साबरमती बनने के उद्देश्य से किए जा रहे निर्माण कार्यों का भी अवलोकन किया गया था। जिसमें निर्धारित मापदंड के अनुरूप निर्माण कार्य नहीं होने का आरोप लगाया गया था।

चौधरी परिवार ने मृत्यु भोज बंद कर समाज में दिया नया संदेश

मनोहर मेहर ने की थी अपील समाज ने सराहा

भोपाल। किसी भी परिवार में मृत्यु के बाद मृत्यु भोज की कुरीति की प्रथा को बंद करने के लिए मेहर मेर समाज ने बीड़ा उठाया है। रायसेन के पास पैमत गांव में चौधरी परिवार द्वारा अच्छी पहल की। इस परिवार ने वे मृत्यु भोज की जगह श्रद्धांजलि सभा रखने जा रहे हैं। पैमत गांव में रहने वाले कुरुमी समाज के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष स्वर्गीय लालजी राम वर्मा के पुत्र मिथलेश चौधरी की धर्मपत्नी दिव्यांश की माता कजली चौधरी का देहांत 10 जून हो गया था। इसके बाद अंतिम संस्कार के दौरान रखी शोक सभा में मेहर मेर समाज के प्रदेश अध्यक्ष मनोहर मेहरा द्वारा मृत्यु भोज न रखकर श्रद्धांजलि सभा रखने की अपील की थी। इसी तरह की अपील गौर समाज के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एलपी पटेल ने भी इस तरह का सुझाव रखा। इसके बाद श्री चौधरी परिवार ने तय किया और मृत्यु भोज न रखकर समाज को नया संदेश दिया। इस परिवार में शनिवार को तेंहरवी का कार्यक्रम न कर केवल श्रद्धांजलि सभा रखी। इस सभा में पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं मध्यप्रदेश कुर्मी समाज प्रदेश अध्यक्ष रामखिलावन पटेल एवं

कुर्मी समाज के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एलपी पटेल, मेहर मेर समाज के प्रदेश अध्यक्ष समाजसेवी मनोहर मेहरा युवा अध्यक्ष अरूण पटेल, ममता पटेल, जी एल पटेल, केसुराम पटेल, हीरालाल पटेल, लीलराम पटेल, गोपीलाल पटेल सहित शोकाकुल परिवार मौजूद रहा। मेहर मेर समाज मध्यप्रदेश के अध्यक्ष मनोहर मेहरा ने कहा कि किसी भी परिवार में दुख की घड़ी में भोजन करना किसी भी स्थिति में ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि गरीब परिवार के लोग कर्जा लेकर इस कुरीति के तहत रसोई का कार्यक्रम करते है और आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते है उनके ऊपर आर्थिक बोझ भी बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि किसी भी परिवार में सदस्य की मृत्यु उपरांत भोजन रसोई की प्रथा को पूर्णत- बंद कराने के लिए वे निरंतर जनमानस को जागरूक करने के लिए अभियान चलाएंगे। श्री मेहर ने कहा कि नई पीढ़ी के युवा भी इसके प्रति जागरूक हो रहे और अपने परिवार में किसी भी सदस्य की मृत्यु उपरांत भोज की परंपरा को नहीं करने दे रहे है।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

कांग्रेस के कमजोर प्रदर्शन का चेहरा सिर्फ पटवारी नहीं

दो दशक पहले तक मध्यप्रदेश कांग्रेस का सबसे मजबूत गढ़ माना जाता था। भाजपा बीच-बीच दो ढाई साल के लिए सरकार में आती और चली जाती थी। राज्य में अभी भी दो दलीय व्यवस्था कायम है। इसके बाद भी कांग्रेस बहुमत के साथ सरकार में वापसी नहीं कर पा रही है। गुटबाजी अकेली वजह नहीं है। कई और भी वजह हैं। जीतू पटवारी के अलावा भी कांग्रेस की हार के कई चेहरे हैं। हार केवल इस लोकसभा चुनाव की नहीं है। कई लोकसभा चुनावों की है। 2003 में भारतीय जनता पार्टी के सरकार में आने के बाद से राज्य में कांग्रेस की पकड़ लगातार कमजोर होती जा रही है। 2018 में कांग्रेस ने सरकार तो बनाई लेकिन,अपने अंतर्विरोधों के चलते उसे पूरे पांच साल चला नहीं पाई। लोकसभा चुनाव में सभी 29 सीटें गंवाने के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कमजोर प्रदर्शन के कारणों का पता लगाने के लिए तीन सदस्यीय समिति बनाई है। समिति का नेतृत्व महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण कर रहे हैं। समिति में सप्तगिरि उल्का और जिग्नेश मेवानी सदस्य हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने मध्यप्रदेश के अलावा छत्तीसगढ़, ओडिशा, दिल्ली, उत्तराखंड, हिमाचल, कर्नाटक और तेलंगाना राज्य को लेकर भी समिति बनाई। ये वो राज्य हैं जहां कांग्रेस का प्रदर्शन काफी बुरा रहा है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सिर्फ एक कोरबा की सीट ही जीत पाई। राजनांदगांव से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी चुनाव नहीं जीत पाए थे। 2019 में भाजपा को यहां 9 और कांग्रेस को 2 सीटें मिली थीं। तब यहां कांग्रेस की सरकार थी। इस बार सत्ता भाजपा की है। इसी तरह दिल्ली की सभी सातों सीटों पर कांग्रेस को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा है। इस बार कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। फिर भी दो प्रतिशत वोट कम हो गए। मध्यप्रदेश की तरह दिल्ली भी वह राज्य है जहां कांग्रेस मजबूत मानी जाती थी। शीला दीक्षित लगातार पंद्रह साल राज्य की मुख्यमंत्री रहीं थीं। ओडिशा और गुजरात में भी कांग्रेस को बड़ी सफलता नहीं मिल पाई। ओडिशा में नवीन पटनायक सरकार के खिलाफ नाराजगी को भारतीय जनता पार्टी अपने पक्ष में भुनाने में सफल रही है।

तेलंगाना की सत्रह सीटों में से सिर्फ 8 सीटें कांग्रेस को मिल पाई हैं। आठ सीटें भाजपा ने जीती हैं। एआईएमआईएम को सिर्फ एक ही सीट पर जीत मिली। यह हैदराबाद सीट है, जहां असदुद्दीन ओवैसी जीते। 2019 में तब सत्ता में रही बीआरएस ने सबसे ज्यादा 9 सीटें जीतीं थीं। इसके बाद भाजपा को 4, कांग्रेस को 3 और एआईएमआईएम को 1 सीट मिली थी। तेलंगाना में चार माह पहले विधानसभा चुनाव हुए थे। इसमें कांग्रेस को बहुमत मिला था। लेकिन, लोकसभा चुनाव में वह अपनी सीटें नहीं बचा पाई। कांग्रेस शासित राज्य कर्नाटक में भी भाजपा को बढ़त मिली है। राज्य की 28 लोकसभा सीटों में से सत्रह सीट भाजपा ने जीती है। दो सीटों पर उसके सहयोगी दल जेडीएस ने जीत दर्ज की है। कांग्रेस को सिर्फ नौ सीटों पर ही जीत मिली है। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने कुल 25 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की थी। कांग्रेस सिर्फ एक सीट जीत पाई थी। इस लिहाज से कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर माना जा सकता है। लेकिन, जिस राज्य में वह सरकार में वहां से कम सीटें मिलना उसकी घटती लोकप्रियता को प्रदर्शित करता है। कांग्रेस की सरकार हिमाचल प्रदेश में भी है। यहां लोकसभा की कुल चार सीटें हैं। सभी चार सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की है। कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल पाया है। यही स्थिति उत्तराखंड में रही। सभी पांच सीटें भाजपा ने जीती हैं। तेलंगाना,कर्नाटक ओडिशा और दिल्ली जैसे राज्यों को छोड़ दिया जाए तो अन्य सभी राज्यों में भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला था।

भाजपा से सीधे मुकाबले में कांग्रेस का प्रदर्शन सुधरा

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा-कांग्रेस के बीच 370 सीटों पर सीधी लड़ाई हुई और भाजपा ने 236 सीटों पर जीत दर्ज की कांग्रेस सिर्फ 36 सीटें ही जीत सकी। भाजपा का स्ट्राइक रेट 63.80 प्रतिशत रहा। जबकि कांग्रेस का स्ट्राइक रेट 9.70 प्रतिशत रहा। दस साल बाद 2024 में भाजपा -कांग्रेस के बीच 286 सीटों पर सीधी लड़ाई हुई। बीजेपी ने 180 सीटों पर जीत दर्ज की और 62.90 फीसदी स्ट्राइक रेट रहा। कांग्रेस ने रिकॉर्ड 83 सीटें जीतीं और 29 फीसदी स्ट्राइक रेट रहा। जबकि 2019 में भाजपा -कांग्रेस के बीच 374 सीटों पर सीधा मुकाबला था। भाजपा ने 257 सीटों पर जीत दर्ज की और 68.70 प्रतिशत स्ट्राइक रेट रहा। कांग्रेस सिर्फ 31 सीटें ही जीत सकी और 8.30 प्रतिशत स्ट्राइक रेट रहा। कांग्रेस ने इस बार 329 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की घोषणा की थी, जिसमें से सूरत और इंदौर के उम्मीदवारों को हटा दिया जाए तो यह संख्या 327 हो जाती है। कांग्रेस ने इस चुनाव में 327 सीटों पर चुनाव लड़ा और 99 सीटों पर जीत दर्ज की है। उसने 21.19 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं। जबकि 2019 में कांग्रेस ने 421 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 52 सीटों पर जीत हासिल की थी। कुल 19.7 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया था। यानी 2024 के चुनाव में कांग्रेस की ना सिर्फ सीटें करीब दोगुनी हो गईं, बल्कि वोट शेयर में भी जबरदस्त इजाफा हुआ। यही कारण है कि कांग्रेस उन राज्यों में जहां कि उसकी सीटें कम हुईं या कोई सीट नहीं मिली,वहां कमजोर प्रदर्शन के कारणों को जानने की कवायद कर रही है। इससे पहले पार्टी दिल्ली मुख्यालय में होने वाली समीक्षा बैठक तक ही सीमित रहती थी। इस बार उसे लग रहा है कि उसे हिंदी पट्टी के पुराने गढ़ से कुछ सीटें मिल जाती तो शायद वह सरकार बनाने की स्थिति में हो सकती थी।

लोकसभा चुनाव के नतीजों में नहीं मिलेगा हार का कारण

कांग्रेस की जो स्थिति कमजोर प्रदर्शन के कारणों का पता लगाने मध्यप्रदेश आ रही है,उसका दायरा सिर्फ लोकसभा चुनाव तक रहेगा या फिर पिछले दो दशक से लगातार कमजोर होने के कारणों पर भी चर्चा करेगी,यह स्पष्ट नहीं है। मध्यप्रदेश में 2003 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ 38 सीटों पर ही जीत मिल पाई थी। भाजपा ने रिकार्ड 173 सीटें जीतीं। कांग्रेस को सिर्फ 31.70 प्रतिशत वोट मिले। जबकि भाजपा 42.50 प्रतिशत वोट हासिल करने में सफल रही थी। इस चुनाव में पृथ्वीराज चव्हाण और पवन बंसल अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से राज्य के प्रभारी थे। दिग्विजय सिंह की लोकप्रियता का अंदाजा उन्हें तभी से है। 2008 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन काफी सुधरा। उसे कुल 71 सीटों पर सफलता मिली। जबकि भाजपा 143 सीटें जीत कर दोबारा सरकार बनाने में सफल रही। भाजपा को कुल 38.09 प्रतिशत वोट मिले। जबकि कांग्रेस 32.85 प्रतिशत वोट ही ले सकी। पिछले दो दशक में 2008 का विधानसभा चुनाव ही अकेला ऐसा चुनाव था,जिसमें कांग्रेस की सत्ता में वापसी की संभावना सबसे ज्यादा थी। भाजपा ने पांच साल में राज्य को तीन मुख्यमंत्री दिए। चुनाव शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में लड़ा गया। उमा भारती नई पार्टी बनाकर मैदान में आ गईं। इसका लाभ कांग्रेस नहीं उठा पाई। उमा भारती की जनशक्ति पार्टी ने लगभग पांच प्रतिशत वोट हासिल कर कांग्रेस की राह रोक दी। 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन फिर कमजोर दिखा। सिर्फ 58 सीट ही वह जीत पाई। उसे 36.79 प्रतिशत वोट मिले। वोट प्रतिशत बढ़ने के बाद भी सीटें घट जाने का कारण इस बात की ओर साफ इशारा कर रहा था कि पार्टी यदि एकजुट होकर मैदान में होती तो शायद नतीजे और बेहतर हो सकते थे। भाजपा को इस चुनाव में 45.19 प्रतिशत वोट के साथ 165 सीटें मिली थीं।

कमलनाथ के रवैये से पंद्रह माह में गिरी सरकार

2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी को मिले वोटों और सीटों में कोई बड़ा अंतर नहीं था। लेकिन, पंद्रह साल बाद सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में मिली सफलता को कमलनाथ ने अपनी सफलता मान लिया। उसी तरह से जिस तरह से वे छिंदवाड़ा को कांग्रेस का गढ न मानकर अपना गढ़ मानते रहे। कांग्रेस को 2018 के विधानसभा चुनाव में 114 सीटों पर जीत मिली थी। उसे कुल 41.35 प्रतिशत वोट मिले। जबकि भाजपा को 109 सीटों के साथ 41.33 प्रतिशत वोट मिले। कांग्रेस को सरकार बनाने के लिए बसपा और निर्दलीय विधायकों ने समर्थन दिया। सरकार सिर्फ पंद्रह माह ही चल पाई। ज्योतिरादित्य सिंधिया का अपने समर्थक विधायकों के साथ पार्टी छोड़ना सरकार के पतन का कारण बड़ा। कांग्रेस जिन कारणों से सरकार में आई थी,उनमें एक अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग की भाजपा से नाराजगी बड़ी वजह रही। सरकार से इस वर्ग की अपेक्षा पूरी नहीं हुई। इसका परिणाम 2019 के लोकसभा चुनाव में देखने को मिला। कमलनाथ के पुत्र नकुल नाथ छिंदवाड़ा से ही चुनाव हारते-हारते बचे थे। कमलनाथ के मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहते हुए भी कांग्रेस लगातार कमजोर हुई। कार्यकर्ताओं से संवादहीनता अक्सर चर्चा में रहती थी। हाल ही के विधानसभा चुनाव में कमलनाथ ने अपनी पसंद से टिकट तो बांटे लेकिन, उम्मीदवारों का प्रचार नही किया न ही आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए। जिसके कारण चालीस प्रतिशत वोट मिलने पर भी सिर्फ 66 सीटें ही कांग्रेस को मिल सकीं।

दिग्विजय सिंह के बयानों से नुकसान

कांग्रेस की राजनीति में कमलनाथ जमीनी राजनीति के नेता कभी नहीं माने गए। वे ड्राइंग रूम राजनीति का चेहरा हैं। इसके बाद भी कांग्रेस ने उन्हें 2018 में प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया। इससे पहले अरुण यादव कांग्रेस अध्यक्ष थे। लगभग साढ़े चार साल तक वे भाजपा सरकार के खिलाफ लड़ते रहे। अध्यक्ष बनने के बाद कमलनाथ ने सबसे पहले उन्हें ही किनारे लगाया। कमलनाथ के अध्यक्ष बनने की एक मात्र वजह उनके आर्थिक संसाधन माने गए। राज्य के दूसरे बड़े नेता दिग्विजय सिंह ने 2003 से 2013 तक के बीच पार्टी को मजबूत बनाने की दिशा में कोई प्रयास नहीं किए। उल्टे उनके बयानों से कांग्रेस को नुकसान हुआ। राज्य कांग्रेस में दिग्विजय सिंह समर्थकों की संख्या सबसे ज्यादा है। जहां भी उनके समर्थक को टिकट नहीं मिला, उसने कांग्रेस को नुकसान पहुंचाया। कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की राजनीति के कारण ही ज्योतिरादित्य सिंधिया को कांग्रेस छोड़ना पड़ी। इसके बाद भी कांग्रेस नेतृत्व ने कमलनाथ पर ही भरोसा बनाए रखा जिसका नुकसान 2023 के विधानसभा चुनाव में हुआ। कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस शिवराज सिंह चौहान की सरकार के खिलाफ एक भी बड़ा आंदोलन खड़ा नहीं कर पाई थी। लोकसभा चुनाव में कमलनाथ अपने सबसे मजबूत गढ़ छिंदवाड़ा को भी नहीं बचा पाए हैं। उनके पुत्र नकुल नाथ भाजपा के बंटी साहू से चुनाव हार गए। ठीक चुनाव के समय उनके सबसे करीबी नेताओं ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन लिया। अमरवाड़ा के विधायक कमलेश शाह भी भाजपा में शामिल हो गए। यहां अब उप चुनाव हो रहे हैं। लेकिन,कमलनाथ और उनके पुत्र कांग्रेस उम्मीदवार धीरन शाह का नामांकन पत्र दाखिल कराने नहीं पहुंचे। जबकि भाजपा उम्मीदवार कमलेश शाह के साथ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा मौजूद थे। यही फर्क भाजपा और कांग्रेस की राजनीति में है।

जीतू पटवारी भी हैं जमीनी राजनीति से दूर

कांग्रेस का जीतू पटवारी वाला मौजूदा नेतृत्व भी जमीनी राजनीति की मांग को नहीं समझ पा रहा है। राज्य के लगभग हर अंचल में लोग बढ़े हुए बिजली के बिल आने को लेकर गुस्से में हैं। लेकिन, कांग्रेस उनके गुस्से का नेतृत्व नहीं कर पा रही। नेतृत्व सत्ताधारी दल भाजपा के विधायक और जन प्रतिनिधि ही कर रहे हैं। जबलपुर में भाजपा कार्यकर्ताओं पर मुकदमा दर्ज हुआ तो पूरी पार्टी सड़क पर आ गई। इस स्थिति का लाभ कांग्रेस नहीं उठा पा रही है। बुधवार को जबलपुर के विजय नगर स्थित सहायक अभियंता कार्यालय में भाजपाइयों ने बिजली बिलों को लेकर हंगामा किया था। इस दौरान तोड़फोड़ के साथ शासकीय फाइलों को भी क्षति पहुंचाई गई। गुरुवार सुबह पुलिस द्वारा हंगामा और तोड़फोड़ करने वाले दो पार्षदों और कार्यकर्ताओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई उसके तुरंत बाद पूरा संगठन विरोध में कोतवाली थाने पहुंच गया। थाने में बैठक के दौरान अधिकारियों से समझौते पर चर्चा होती रही,लेकिन बात नहीं बनी। शाम को विधायक अभिलाष पांडे के साथ नगर अध्यक्ष प्रभात साहू और दर्जनों कार्यकर्ता कोतवाली के सामने पहुंच गए। विधायक ने टीआई और एएसपी समर वर्मा से बात नहीं की और कहा कि जब तक एसपी आदित्य प्रताप सिंह मौके पर नहीं आएंगे कोई बात नहीं सुनी जाएगी। इसके बाद विधायक केंट अशोक रोहाणी और पाटन विधायक अजय विश्नोई भी मौके पर पहुंच गए। आधे घंटे से ज्यादा समय तक भाजपाई सड़क पर डटे रहे, जिसके चलते जाम के हालात बन गए। एक घंटे बाद एसपी मौके पर आए। एसपी ने उचित जांच के बाद ही प्रकरण में कार्रवाई की बात कही, तब मामला शांत हुआ।

सप्रे संग्रहालय में 'ई-लाइब्रेरी' का शुभारंभ

स्वयं समाज और देश की प्रगति के लिए चिंतन आवश्यक : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल में पं रामेश्वरदास भार्गव स्मृति ई-लाइब्रेरी का शुभारंभ किया। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि पुस्तकें ज्ञान का भंडार हैं। ज्ञान अध्ययन और अनुभव से प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि स्वयं की प्रगति, समाज और देश की प्रगति के लिए चिंतन आवश्यक है। पुस्तकों के अध्ययन से सोच का विकास होता है। एक विषय को कई नज़रियों से देखने की समझ विकसित होती होती है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि माधवराव सप्रे संग्रहालय द्वारा नियमित रूप से समय और मांग के आधार पर सुविधाओं को विकसित किया गया हैं। 40 वर्ष पहले शुरू हुए संग्रहालय में आज 1 लाख 75 हज़ार से अधिक पुस्तकें हैं। संग्रहालय में डिजिटल लाइब्रेरी भी क्रियान्वित है। ई-लाइब्रेरी से छात्रों, शोधकर्ताओं को करोड़ों पुस्तकों, समाचार पत्रों और पांडुलिपियों और अन्य अध्ययन सामग्री से जोड़ा जा सकेगा। उन्होंने इन सतत प्रयासों के लिए सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक श्री विजय दत्त श्रीधर और प्रशासन प्रबंधन से जुड़े सभी पदाधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना की।

विभूतियों को सम्मानित किया- उप मुख्यमंत्री ने दैनिक भास्कर के राज्य संपादक सतीश कुमार सिंह को माधवराव सप्रे राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से और 'बाल पुस्तकालय' की रचनाकार कु. मुस्कान अहिरवार को महेश गुप्ता सृजन सम्मान प्रदान किया। उन्होंने कहा कि अच्छा कार्य करने पर सम्मानित किया जाना गौरवशाली परंपरा है। इससे सम्मानित व्यक्तियों का हौसला बढ़ता है साथ ही अन्य नागरिकों को प्रेरणा मिलती है। श्री सतीश सिंह ने सप्रे संग्रहालय से जुड़े अपने संस्मरण और संग्रहालय की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। कु. मुस्कान ने बाल पुस्तकालय के माध्यम से प्रेरणादायक पुस्तकों के अध्ययन को बच्चों के लिए रुचिकर बनाने के प्रयासों को साझा किया।

कुलगुरु माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय प्रो. के.जी.सुरेश ने कहा कि युवा पीढ़ी को पुस्तकालय से जोड़ने में यह प्रयास कारगर सिद्ध होगा। साथ ही पुराने अख़बार, कृतियों, पाण्डुलिपियों की सुरक्षा के साथ सुविधाजनक रूप से इनका अध्ययन किया जा सकेगा। सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक श्री विजय दत्त श्रीधर ने संग्रहालय में किए जा रहे कार्यों और आगामी आयोजनों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार, समाज सेवी और जनसंपर्क विभाग के वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारी उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ संयुक्त रूप से सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करें : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ के उप-मुख्यमंत्री श्री साव के नेतृत्व में आये दल को किया संबोधित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पड़ोसी राज्य छत्तीसगढ़ की भौगोलिक सीमा के साथ-साथ दोनों राज्यों की साझा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विरासत है। दोनों राज्यों की सरकारों द्वारा कुछ कार्यक्रम संयुक्त रूप से आयोजित किए जा सकते हैं। व्यवस्था और प्रबंधन की दृष्टि से दो राज्य बने हैं, पर भावनात्मक रूप से हम एक हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव छत्तीसगढ़ के उप-मुख्यमंत्री श्री अरुण साव के साथ आए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रतिनिधिमंडल को समत्व भवन में संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दोनों राज्यों के जनप्रतिनिधि राष्ट्र निर्माण को समर्पित हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ के जनप्रतिनिधियों से मध्यप्रदेश के विकास और जनकल्याण के लिए सुझाव और सहयोग का आव्हान करते हुए उन्हें अपने ज्ञान और कौशल का मध्य प्रदेश में भी विस्तार करने के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन के ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए छत्तीसगढ़ के प्रतिनिधियों को महाकालेश्वर के साथ-साथ उज्जैन स्थित भगवान श्रीकृष्ण परंपरा, देवी परंपरा के स्थानों एवं त्रिवेणी संग्रहालय के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। कार्यक्रम को छत्तीसगढ़ के उप-मुख्यमंत्री श्री साव ने भी संबोधित किया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संस्थापक श्री शालिग्राम तोमर के भोपाल में आयोजित स्मृति समारोह में भाग लेने के लिए परिषद के लगभग 70 सदस्यों का दल छत्तीसगढ़ से भोपाल आया हुआ है। दल ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को उनके छात्र जीवन से संबंधित छायाचित्र भेंट किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छत्तीसगढ़ के उप-मुख्यमंत्री श्री साव को अंग वस्त्रम, पुष्पगुच्छ व स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया साथ ही सदस्यों को भी अंग वस्त्रम भेंट कर अभिवादन किया। श्री चंद्रहास चंद्राकर, श्री विवेक सक्सेना और श्री प्रदीप मिश्रा विशेष रूप से उपस्थित थे।

महिला को सरेआम लाठी से पीटा

आलीराजपुर में चरित्र शंका में पति और दो देवर ने की मारपीट

आलीराजपुर (नप्र)। आलीराजपुर में एक महिला को सरेआम लाठी से पीटने का वीडियो सामने आया है। महिला के पति और दो देवर पर उसके साथ मारपीट करने का आरोप लगा है। वीडियो में दिख रहा है कि महिला का पति उसे लाठी से पीट रहा है। उसे खींचकर ले जा रहा है। साथ ही उसे अपशब्द भी कह रहा है।

इस दौरान गांव के लोग तमाशबीन बने रहे। कुछ लोगों ने इस घटना का वीडियो भी बनाया। जिसे सोशल मीडिया पर अपलोड कर वायरल कर दिया। वीडियो पर संज्ञान लेते हुए पुलिस ने आरोपी पति और दोनों देवर को गिरफ्तार कर लिया है।

चरित्र शंका में की महिला के साथ मारपीट- घटना जिले के सोरवा थाना क्षेत्र की बुधवार की बताई जा रही है। जिसका वीडियो अब सामने आया। बताया जा रहा है कि महिला अपने मायके जा रही थी। इस दौरान उसके देवर ने उसे रोक लिया और चरित्र को लेकर सवाल उठाए। इसके बाद महिला का पति और एक अन्य देवर भी मौके पर आ गए और महिला को लाठियों से पीटना शुरू कर दिया। घटना के बाद पीड़िता किसी तरह अपने मायके पहुंची।

पति और दोनों देवर को जेल भेजा गया- पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास ने बताया कि वीडियो को संज्ञान में लेकर सोरवा पुलिस को कार्रवाई के निर्देश दिए गए थे। महिला के पति और दो देवर के खिलाफ केस दर्ज कर गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया।

अमरवाड़ा विधानसभा के नामांकनों की स्क्रूटनी आज

17 उम्मीदवारों ने जमा किए 26 फॉर्म, बुधवार को नामांकन वापसी के बाद साफ होगी अंतिम तस्वीर

भोपाल (नप्र)। छिंदवाड़ा जिले की अमरवाड़ा विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिए 21 जून तक जमा हुए नामांकन फॉर्म की जांच सोमवार को होगी। इस दौरान पूरे दस्तावेज जमा न करने वाले और गलत जानकारी देने वाले प्रत्याशियों के नामांकन रिजेक्ट किए जा सकते हैं।

सोमवार को दोपहर बाद 3 बजे तक जांच के बाद यह तय हो जाएगा कि कितने उम्मीदवार चुनाव लड़ने के योग्य हैं? हालांकि, फाइनल स्थिति बुधवार को नामांकन वापसी की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही साफ होगी।

चुनाव आयोग के तय कार्यक्रम के अनुसार, इस विधानसभा सीट के लिए 14 जून से नामांकन फॉर्म जमा कराने का सिलसिला शुरू हुआ था। यह 21 जून तक चला। अंतिम दिन 6 उम्मीदवारों ने 8 नाम निर्देशन पत्र जमा किए थे। 14 जून से अंतिम दिन तक कुल 17 अभ्यर्थियों ने 26 नामांकन दाखिल किए हैं। इनमें से 3 अभ्यर्थियों ने कांग्रेस, जनसेवा गोंडवाना पार्टी और निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन फॉर्म भरा है। शनिवार और रविवार के अवकाश के बाद अब सोमवार को नामांकन पत्रों की स्क्रूटनी की जाएगी।